—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2007 वर्ष 6. अंक 06

इन्सानी आंख

जिस आंख से आंसू न बहें, वह आंख इन्सान की आंख नहीं नरगिस की आंख है, जिस दिल में दूसरों की हम्दर्दी नहीं वह दिल इन्सान का दिल नहीं दरिन्दे का दिल है।

(अ़ली मियां)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

❐	हमारा तशख्खुस	सम्पादकीय..... 3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी 5
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 7
❐	हिन्दोस्तानी उलमा और उनके इल्मी कारनामे	मौ० स० अबुल हसन अली हसनी 9
❐	मुनाजात	खैरून्निसा बेहतर 10
❐	स्वतंत्रता दिवस	डॉ० हारून रशीद 11
❐	कुर्आन की तिलावत	मौ० मुजीबुल्लाह नदवी 13
❐	धूम्रपान के खिलाफ मुहिम	जहीर ललितपूरी 14
❐	कद्रें बदल रही हैं	अबू मर्गूब 17
❐	हड़ का फाइदा	इदारा 18
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मु० तारिक नदवी 19
❐	यौन शिक्षा भारतीय संस्कृति पर आघात	एम. शैजी 20
❐	वह्य और विज्ञान	बिलाल अब्दुलहयी..... 22
❐	जाग हे भारतवासी जाग	कैफ नवगांवीं 23
❐	किस्सा इब्राहीम (अ०) का	अबू मर्गूब 24
❐	पी.एम.टी. की तैयारी का आसान तरीका	डा० एम०नसीम आजमी 25
❐	प्रातः काल का टहलना	मु० अजमल खां 27
❐	भारत का संक्षिप्त इतिहास	सय्यिद अबूजर नदवी 28
❐	हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान	अबू मतलूब..... 31
❐	सलाम	माहिरूल कादिरी 32
❐	क्या अंग्रेजों का भगाना ही हमारा काम था?	मौ० स० अबुल हसन अली 33
❐	इन्सानी जिन्दगी में वस्त्र का महत्व	मु० असरारूल हक कासिमी 36
❐	क्या इस्लाम बल से फैला	डा० शमा खातून..... 38
❐	अलहाज अब्दुर्रज्जाक अल्लाना नहीं रहे	शाहिद हुसैन 39
❐	काबिले दाद सुनीता	शाहिद हुसैन 39
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

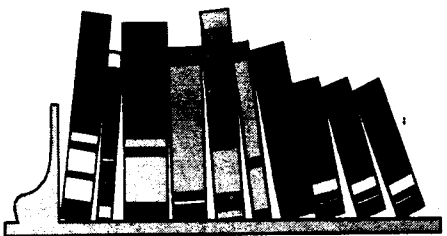

हमारा तशख़्ख़ुस (व्यक्तित्व)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अ़ब्दुल्लाह खाते पीते घर का पढ़ा लिखा काश्तकार नवजवान था। गांव में उस के ख़ान्दान का ख़ास तौर से उस के वालिद हाजी उ़स्मान का एक मक़ाम था। शादी हुए एक साल गुज़र चुका था, ख़बर गर्म थी कि हाजी उ़स्मान दादा बनने वाले हैं। रस्म के मुताबिक़ एक दिन मह़ल्ले की औ़रतें जिन में हिन्दू औ़रतें ज़ियादा थीं हाजी जी के घर आ गयीं और इत्तिलाअ़ दी कि आज शाम से हम लोग रोज़ाना एक घन्टा ढोलक के साथ गा बजा कर ख़ुशियां मनाएंगे और यह सिलसिला छट्टी तक चलेगा, हाजी जी मियां बीवी चुप थे, उन को अपने बेटे के ह़ालात मअ़लूम थे, जिस ने एअलान कर रखा था कि इन्शा अल्लाह हम को हर ह़ाल में अपना इस्लामी तशख़्ख़ुश क़ाइम रखना है, उस ने ख़ुद दाढ़ी रख ली थी और नमाज़ का पाबन्द था, हाजी जी दाढ़ी मुंडा कर ह़ज कर आए थे, अ़ब्दुल्लाह ने हिक्मत से बात कर के हाजी जी से दाढ़ी रखवा ली थी, वह हाजी जी से रमज़ान में ह़िसाब कर के ज़कात निकलवाता था, घर में कोई बे नमाज़ी न था, रमज़ान में सभी लोग रोज़ा रखते थे।

औ़रतों की यह गुफ्तगू चल रही थी कि अ़ब्दुल्लाह आ गया उसे औ़रतों के अल्टी मेटम की ख़बर हुई, वह निगाह नीची कर के औ़रतों से मुख़ातब हुआ : मेरी माओ और बहनो ! हम मुसलमान हैं, इस्लाम में गाना बजाना ना पसन्द किया गया है, नाच गाने से रोका गया है। हम आप का शुक्रिया अदा करते हैं कि आप लोग हमारी ख़ुशी में ख़ुश हैं, ऐसे ही हम देखते हैं कि हमारे गांव के लोग किसी के दुख में भी एक दूसरे के शरीक होते हैं, यह इन्सानीयत की फ़ित्री बातें हैं और यह बहुत ही अच्छी अ़लामतें हैं

छोटे गांवों में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, हिन्दुओं में चाहे क्षत्री, ब्राह्मण हों या यादव, पासी, कोरी चमार हों, सब बाहम (परस्पर) रिश्ता क़ाइम किये होते हैं। उन औ़रतों में कुछ हिन्दू औ़रतें वह थीं जो गांव के रिश्ते से अ़ब्दुल्लाह की भाभी लगती थीं, उन में से एक तेज़ औ़रत बोली: अ़ब्दुल्लाह मियां! न हम तुम्हारी मां हैं न बहन, हम तुम्हारी भाभी हैं। तुम को वह सब, करने में शर्म न आई और अब हमारे सोहर सुनने में शर्म आती है या फिर कंजूसी की सूझी है कि हम लोगों को खिलाना पिलाना न पड़े।

अ़ब्दुल्लाह ने कहा भाभी जी! भाभी भी एक प्रकार की बहन ही होती है और कुछ लोगों ने भाभी को मां समान माना है। पस आप मेरी भाभी भी हैं बहन भी हैं, और मां समान भी हैं। क्या आप यह पसन्द करेंगी कि मेरा और आप सब का सृजन ह़ार तथा पालन हार हम से नाराज़ हो जाए? सब ने कहा नहीं नहीं हम ऐसा हरगिज नहीं चाहते हैं। अ़ब्दुल्लाह बोला फिर हम सब के पालन हार ने अपने अन्तिम सन्देष्टा ह़जरत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) द्वारा हम को नाच गाना, बाजा से रोका है, इस लिए हमारे घर न ढोलक बजेगी न औ़रतें बुलन्द आवाज़ से सोहर गाएंगी। औ़रतों ने अ़ब्दुल्लाह की बात मान ली और अपने अपने घर चली गईं। इस गुफ़्तगू का बड़ा फ़ाइदा यह हुआ कि गांव ही नहीं रिश्तेदारों में भी शुहरत हो गई कि अ़ब्दुल्लाह एक दीन्दार जवान

है, वह ग़ैर शरअी रस्मीयात का सख़्त मुख़ालिफ़ है। कुछ दिनों पश्चात् अ़ब्दुल्लाह के घर पैदाइश हुई, हर कॉम सुन्नत के मुताबिक़ हुआ, बच्चे का ख़तना हुआ, अ़क़ीक़ा हुआ, रस्मों का कहीं गुज़र न हुआ, ह़ाजी उस्मान दादा बन गऐ बड़े ख़ुश थे, इस लिए कि इन को तजरिबा था कि रस्मों में कोई न कोई फ़ी लगता था, कोई ख़ुश तो कोई मुंह फुलाए हुए, ह़ाजी उस्मान ने अपनी ख़ुशी का इज़हार ज़रूरतमंदों की मदद कर के किया, अल्लाह का शुक्र अदा करके किया।

अ़ब्दुल्लाह के इस अ़मल का असर गांव और रिश्तेदारों के दूसरे जवानों पर पड़ा और बहुतों ने रस्मीयात को ख़ैरबाद कहा, अ़ब्दुल्लाह कोई आ़लिम न था लेकिन उस ने जो कुछ सीखा था वह आ़लिमों की सुह़बत और उन की किताबों से सीखा था जमाअ़ते इस्लामी के बअ़ज़ मिम्बरान उस के पास आए वह जमाअ़त इस्लामी के उ़लमा से भी मुतअ़ल्लिक़ हो गया, जमाअ़ते तब्लीग़ के लोग आए वह उन से भी मुतअ़ल्लिक़ हो गया। वह न बहुत पैसे वाला है न तंगदस्त है। वह ज़कात निकालता है, अपने खेत की पैदावार से ग़रीबों की मदद भी करता है। मशहूर है वह रिशवत नहीं देता सूद न लेता है न देता है, वह मुनश्शियात (नशीली चीज़ों) से दूर रहता है, बीड़ी सिग्रेट, पान तम्बाकू गुटका वग़ैरह का उस के यहां गुंज़र नहीं ग़रज़ कि अ़ब्दुल्लाह औसत दर्जे का एक मिसाली मुस्लिम नवजवान है। अपने गांव में अपने रिश्तेदारों में उसकी इ़ज़्ज़त है।

ह़ाजी उ़स्मान और अ़ब्दुल्लाह अगर्चि फ़र्ज़ी नाम हैं लेकिन उन की शख़्सीयतें फ़र्ज़ी व ख़याली नहीं अस्ली हैं तो क्या ऐसा मुम्किन नहीं कि हर कलमागो, हर मुसलमान दाढ़ी रखे, दाढ़ी मुंडाने को ऐसा ही समझे जैसे उस की नाक कट गई हो, हर मुसलमान नमाज़ की पाबन्दी करे, रमज़ान के रोज़े रखे, एक मुसलमान भी नमाज़ छोड़ने वाला या रोज़ा छोड़ने वाला न हो, जिस को अल्लाह ने माल दिया हो ज़कात अदा करे, मज़ीद अपने माल से ग़रीबों की मदद करे नेक कामों में, मदरसे क़ाइम करने में, मस्जिदें बनाने में ख़र्च करे, ह़ज्ज फ़र्ज़ होते ही ह़ज्ज करे, जुआ, शराब, घूस, सूद, चोरी, डकैती फ़ितना फ़साद बद निगाही, बेपरदगी, काम चोरी, धोखा, फ़रेब, ज़ुल्म, ज़ियादती, झूठ, ग़ीबत, ह़सद, कीना वग़ैरह से दूर रहे। क्या इस्लाम में यह सब मना नहीं है? आप सोचें अगर सारे मुसलमान मर्द औ़रतें शरीअ़त पर चलने लगें तो क्या हमारे ग़ैर मुस्लिम भाई मुसलमानों को बुरी निगाह से देखेंगें? ना पसन्द करेंगे? हर गिज़ नहीं। और अगर सारे मुसलमान मर्द औ़रत शरीअ़त के पाबन्द हो जाएं तो किस तरह का मुआ़शरा वजूद में आएगा? दुन्या वाले इ़ज़्ज़त दें या न दें, अल्लाह का करम तो ह़ासिल होगा, "इन्नमा तुवफ़्फ़ौन उजूरकुम् यौमल् क़ियामति" तुम सब अपने अ़माल का बदला तो क़ियामत में पाओगे। "फ़मन ज़ुह़ज़िह़ अ़निन्नार व उदख़िलल् जन्नत फ़क़द् फ़ाज़्" पस जो दोज़ख़ से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िल हो गया वह कामियाब हो गया, पस मोमिन को तो दायमी कामियाबी मिलना ही है, शरीअ़त की पाबन्दी पर इस दुन्या में भी क़ल्बी सुकून है, आज़माइशों के साथ भी क़ल्ब को जो सुकून मिलेगा उस का मज़ा वही जान सकता है जिस को इस दौलत से नवाज़ा गया।

"या अय्युहल्लज़ीन आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़ः "ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे पूरे दाख़लि हो जाओ यह बात हरगिज़ पसन्द नहीं कि शरीअ़त की कुछ चीजें लीजाएं कुछ छोड़ी जाएं अगर मुसलमान मर्द किसी अपने मुआ़शरे में सब के सब दाढ़ी रख लें सब के सब नमाज़ की पाबन्दी कर लें, मुसलमान औ़रतें पर्दे की पाबन्द हो जाएं और नमाज़ पढ़ने लगें तो बड़ा इन्क़िलाब आ सकता है और नमाज़ की बरकत से अगर वह सह़ीह़ तौर पर अदा की जाए तो

(शेष पृष्ठ १३ पर)

कुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंज़ूर नोमानी

नुबुव्वत व रिसालत

कुरआने–मजीद जिस निजामे–जिन्दगी की इन्सानों को दावत देता है जैसा कि मालूम हो चुका, उस की पहली बुन्याद तो यही है कि खुदा–ए–वह्दहू लाशरीक की हस्ती और उस की सिफात को इस तरह माना जाये जिस तरह की हकीकत में वह है।

और दूसरी बुन्याद यह है कि आखिरत की जिन्दगी, और वहां की जजा–व–सजा पर यकीन लाया जाये जो अल्लाह तआला की सिफते–अदल–व हिकमत का लाजिमी तकाजा है, और जिस के बगैर यह दुन्या नाकिस व नामुकम्मल बल्कि बेकार व बे मकसद तमाशा है। इन दोनों बुन्यादों के बारे में कुरआने–करीम ने जो कुछ बतलाया है हम अपने पढ़ने वालों के सामने किसी कद्र तफसील के साथ उस को पेश कर चुके हैं।

जिन्दगी की तीसरी अहम एतिकादी (अकीदे की) बुन्याद जिस के मानने की कुरआने मजीद दावत देता है, और जिस को अपनी दीनी तालीम–व–दावत की असल बुन्याद ठहराता है, यह है कि रिसालत व पैगम्बरी के पूरे सिलसिले को माना जाये। यानी पहले तो इस उसूली हकीकत को मान लिया जाये कि इन्सानों की जरूरत के लिय जिस तरह अल्लाह तआला ने अनाज उगाने वाली जमीन पैदा की, रौशनी और गर्मी पहुंचाने वाला सूरज पैदा किया, और हवा पानी वगैरह वे सारी चीजें पैदा कीं जिन के हम इस दुन्यावी जिन्दगी में मुहताज हैं, इसी तरह उस ने अपनी जात व सिफात का सही इल्म आम इन्सानों तक पहुंचाने के लिए और जिन्दगी के उस तरीके की तालीम व हिदायत के लिए जो अल्लाह तआला ने इन्सानों के लिए मुकर्रर किया है और जिस पर चल कर इन्सान अल्लाह की रजा और हकीकी नजात (मुक्ति) व फलाह (कामयाबी) हासिल कर सकता है, उस ने नबुव्वत व रिसालत का सिलसिला भी काइम फरमाया। और हर जमाने और दुन्या के हर भाग में इस की जरूरत व तकाजे के मुताबिक नबी और रसूल भेजे। ये सब अल्लाह के प्यारे और बरगुजीदा (खुदारसीदा–महात्मा) बन्दे थे। और अपने वक्त में जो हिदायत व तालीम उन्होंने दुन्या को दी वह बिलाशुबह खुदा की सच्ची तालीम थी। बहर हाल कुरआने मजीद पूरे जोर और आग्रह के साथ इस बात की दावत देता है कि अल्लाह के पैगम्बरों पर (चाहे वे किसी जमाने, किसी मुल्क और कौम में आये हों) बिना भेद के ईमान लाया जाये, सब की सच्चाई पाकबाजी की शहादत दी जाये, और अल्लाह का पैगम्बर होने की हैसियत से अपने–अपने दौर (काल) और अपने–अपने दाइरे और हलके (क्षेत्र) में सब की इताअत (आज्ञा पालन) जरूरी समझी और मानी जाये।

इसी के साथ कुरआने–मजीद यह भी बतलाता है कि पहले पैगम्बरों का दौर खत्म हो चुका, अब दुन्या के इस दौर के लिए अल्लाह के नबी व रसूल हजरत मुहम्मद अरबी हैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। इसी के साथ कुरआने–मजीद अल्लाह तआला की तरफ से इस का भी एलान करता है कि जो हिदायत व तालीम देकर हमने आप (स०) को भेजा है वह न सिर्फ अगले नबियों – रसूलों की उन सारी तालीमात पर हावी (व्याप्त) है, जो वे अपने अपने समय पर लेकर आये थे बल्कि पिछले पैगम्बरों की मोहकम (दृढ़) तालीमात का मुस्तनद (प्रमाणित) और एतिमाद (विश्वास) के काबिल मजमूआ, अब आप (स०) ही की तालीम और आप (स०) ही की लायी हुई किताबे–मुबीन (कुरआन) है। अतएव आप (स०) का इत्तिबा (पैरवी), अल्लाह के सारे पैगम्बरों का इत्तिबाअ है, और आप (स०) का इन्कार सारे पैगम्बरों का इन्कार है। फिर कुर्आने करीम यह भी एलान करता है कि हमारी तरफ से जो जामे (व्यापक) हिदायत व तालीम लेकर आप (स०) आये हैं वह ऐसी कामिल और मुकम्मल है कि हमेशा–हमेश के लिए अब यही काफी है। और हर तरह की तहरीफ व मिलावट से इस की हिफातज का प्रबन्ध

ा भी हम ने कर दिया है। और इसी लिये नुबूव्वत व रिसालत के उस सिलसिले को जो दुन्या के आरम्भ से चला आ रहा था अब रिसालते–मुहम्मदी (सल्ल०) पर खत्म कर दिया गया है और यह नबीए–अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कामिल नबी होने के साथ इस मुकद्दस (पवित्र) सिल्सिले के खातिम भी हैं।

यह है नबूव्वत व रिसालत के बारे में कुरआने – मजीद की दावत का खुलासा और हासिल। अब इन्हीं बातों को कुरआने–मजीद की आयतों में पढ़िये–सूरए–नह्ल में इरशाद है :–

तर्जमा : और हमने भेजे हैं हर कौम में रसूल। (अन्नहल : ३६)

और सूरए–निसॉअ में अगले जमाने के चंद खास खास रसूलों का नाम बनाम तजकिरा करने के बाद फरमाया गया :

तर्जमा : और हम ने इन्सानों की तरफ और भी बहुत से अन्य रसूल भेजे जिन का हाल हम ने आप को पहले बताया है, और बहुत से वे रसूल भी हैं जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया। (अन्निसाअ : १६४)

और इसी रूकूअ में चंद आयतों के बाद इर्शाद फरमाया :

तर्जमा : पस तुम अल्लाह पर और उस के साथ रसूलों पर ईमान लाओ।

जो लोग अल्लाह और उस के सब ही रसूलों को न मानें बल्कि उन में भेद करें, मसलन इस तरह कि खुदा पर ईमान लाने का तो इकरार और दावा करें और उस के रसूलों के मुनकिर हों या चंद रसूलों को मानें और कुछ का इन्कार करें, तो कुरआन कहता है कि उन का यह जुजवी (आंशिक) इकरार व ईमान कुछ भी मोतबर नहीं बल्कि जब तक ये सब को न मानें उस वक्त तक काफिर हैं।

सूरए– निसॉअ में इर्शाद है :

तर्जमा : जो लोग अल्लाह को और उसके सब रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि (बाज को मान कर और बाज का इन्कार करके) अल्लाह और उसके रसूलों में तफरीक (भेद) करें और (इसी वजह से) वे कहते हैं कि हम बाज (कुछ) को मानते हैं और बाज को नही मानते और वे (अपने इस रवैये से) ईमान और कुफ्र के बीच एक राह निकालना चाहते हैं (कि न सब पर ईमान हो, और न सब का इन्कार हो) तो ऐसे लोग बेशक काफिर हैं, और हम ने ऐसे काफिरों के लिए रूसवा करने वाला अजाब तैयार किया है। और जो लोग अल्लाह को और उस के सब रसूलों को मानते हैं और उन में से किसी में तफरीक नहीं करते (वही सच्चे मोमिन हैं) उन को अल्लाह पूरा पूरा सवाब देगा, और अल्लाह बड़ा बख्शने वाला, बड़ी रहमत वाला है।

कुरआने–मजीद कहता है कि जितने पैगम्बर भी अल्लाह तआला की तरफ से आये, जब भी आये और जिस मुल्क और जिस कौम में भी आये उन सब की इताअत वाजिब (जरूरी) थी। और उनके हुक्मों पर चलना उन लोगों पर फर्ज था जिन की तरफ वे भेजे गये।

तर्जमा : और जो पैगम्बर भी हम ने भेजे, इस लिए भेजे कि अल्लाह के हुक्म से उन की इताअत (पैरवी) की जाये। (अन्निसाअ : ६४)

दूसरी जगह फरमाया कि नबी व रसूल की इताअत अस्ल में खुदा की ही इताअत है क्योंकि नबी और रसूल जो हुक्म देते हैं वे उन के हुक्म नहीं होते हैं बल्कि खुदा के हुक्म होते हैं, जिन को वे हजरात, अल्लाह तआला की तरफ से उस के बन्दों को पहुंचाते हैं।

तर्जमा : जिस ने खुदा के रसूल की फर्माबरदारी की, (आदेशों का पालन किया) उस ने अस्ल में अल्लाह तआला की फर्माबरदारी की। (अन्निसाअ: ८०)

और जिस तरह रसूल की इताअत खुदा की इताअत है, इसी तरह रसूल की नाफरमानी और मुखालिफत अस्ल में खुदा की ना फरमानी और उसके खिलाफ बगावत है। इसी लिए कुरआने–मज़ीद में जगह–जगह इन दोनों को एक साथ जिक्र करके इस की सख्त सजा और पादाश (भुगतान) से डराया गया है।

तर्जमा : जिस ने मुखालिफत (विरोध) की अल्लाह की और उसके रसूल की, तो मालूम होना चाहिए कि अल्लाह का अजाब बड़ा सख्त है। (अन्फाल : १३)

और सूरए–तलाक में फर्माया गया :

तर्जमा : और बहुत सी बस्तियां थीं जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरताबी की तो हम ने उन का बड़ा सख्त मुहासबा (पकड़) किया और उन को हम ने भारी अ ाब की सजा दी। गरज उन्होंने अपने आमाल का वबाल चखा और उन के आमाल का अन्जाम खसारा और टूटा ही रहा (यह तो दुन्या में उन के साथ हो चुका और आखिरत का) सख्त तरीन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

गरीब मुसलमानों की फजीलत

हजरत सअद (र०) बिन अबी वक्कास से रिवायत है कि हम और इब्नि मस्ऊद (र०) और हुजैल का एक आदमी और बिलाल (र०) इनके अलावा दो आदमी और, जिनका नाम मैं भूल गया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। कुरैश ने हम लोगों को देखकर नबी (स०) से दरख्वासत की कि आप इन लोगों को निकाल दीजिए ताकि यह हम पर जुरअत न करें। इस बात का आप के दिल में कुछ खयाल गुजरा। अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी –

अनुवाद : उन लोगों को न निकालो जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं और उसकी रजा चाहते हैं। (अनआम : ५२)

गरीबों की दिल शिकनी

हजरत अम्र बिन आईज मुजनी (र०) से रिवायत है (यह उन लोगों में से थे जिन्होंने बैअते रिज्वान की थी) कि सलमान (र०) सुहैब (र०) और बिलाल (र०) और कुछ लोग बैठे हुए थे कि अबू सुफ्यान उधर से गुजरे। तो उन लोगों ने कहा अभी तक अल्लाह की तलवारों ने अल्लाह के दुश्मनों पर अपना असर नहीं किया। हजरत अबू बक्र (र०) ने कहा तुम कुरैश के सरदार और बुजुर्ग के मुतअल्लिक ऐसी बातें कहते हो। आपने फरमाया ऐ अबूबक्र (र०) तुमने शायद उन को नाराज कर दिया है, तो अल्बत्ता तुमने अपने रब को नाराज किया। हजरत अबूबक्र (र०) उन लोगों के पास आये और कहा ऐ भाइयो, क्या मेरी बात ने तुमको नाराज कर दिया। उन्होंने कहा नहीं, अल्लाह तुमको बख्शे ऐ मेरे भाई।

यतीम की किफालत

हजरत सहल बिन सअद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यतीम की किफालत करने वाला और मैं जन्नत में इस तरह होंगे, कल्मः की उंगली और बीच की उंगली में कुछ फर्कः रखकर बताय कि इस तरह। (मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यतीम की किफालत रकने वाला, ख्वाह उसका हो या दूसरे का हो, वह और मैं जन्नत में इस तरह होंगे, रावी ने कल्मः की उंगली मिलाकर बताया कि इस तरह। और वह रावी मालिक बिन अनस (र०) थे। (मुस्लिम)

मिस्कीन की तारीफ

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मिस्कीन वह नहीं है कि एक लुकमा या दो लुकमे एक खजूर या दो खजूरें उसको पलटा दें। मिस्कीन वह है जो मुहतात रहे। (बुखारी–मुस्लिम)

और इन दोनों की एक रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मिस्कीन वह नहीं है जो लोगों के पास आये और एक या दो लुकमा एक खजूर या दो खजूरें उसको पलटा दें। मिस्कीन वह है कि ऐसी दौलत न पाये जो उसके लिए काफी हो न किसी को उसकी मुफ्लिसी का इहसास हो और न लोगों के सामने हाथ फैलाता फिरे।

बेवा और मिस्कीन की खबरगीरी का सवाब

हजरत अबू हरुैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फरमाया, बेवा और मिस्कीन की खबर लेने वाला अल्लाह के रास्ते में लड़ने वाले की तरह है। और मेरा ख्याल है कि यह भी फरमाया, ऐसे आबिद की तरह जो सुस्त न पड़े। या ऐसे रोजेदार की तरह जो इफ्तार न करे।

बुरी दावत

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बुरा खाना वलीमा का वह खाना है कि उन लोगों को रोका जाये जो खुद से आयें और उनको बुलाया जाये जो इन्कार करें। और जो दावत कुबूल न करेगा वह अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा। और मुस्लिम, बुखारी की एक रिवायत में हजरत अबू हुरैरः (र०) ही से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमायी कि बदतरीन वलीमा का वह खाना है जिसमें अमीरों को बुलाया जाय और गरीबों को छोड़ दिया

जा५। (बुखारी – मुस्लिम)

लड़कियों की परवरिश

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, जो दो लड़कियों की परवरिश उस वक्त तक करे कि वह जवान हो जायें तो कियामत के दिन वह आयेगा (जब) मैं और वह इस तरह होगे और आपने अपनी उंगलियों को मिला दिया। (मुस्लिम)

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि मेरे पास एक औरत आइ। उसके साथ दो लड़कियां थीं। उसने मुझसे सवाल किया, मेरे पास एक खजूर के सिवा कुछ भी नहीं था, वही मैंने उसको दे दिया। उसने अपनी दो लड़कियों में तकसीम कर दिया। खुद कुछ न खाया और चली गयी। नबी (स०) ने फरमाया जो लड़कियों में किसी चीज के साथ आजमाया जाये और उनके साथ अच्छे सुलूक करे तो वह लड़कियां उसके लिए आग से पर्दा बन जायेंगी। (बुखारी – मुस्लिम)

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि मेरे पास एक औरत आई, उसके साथ दो लड़कियां थीं उसने मुझसे खाना मांगा, मैंन उसको तीन खजूरें दीं। औरत ने एक एक खजूर अपनी दोनों लड़कियों को दी और एक खजूर खाने की नीयत से अपने मुंह तक ले जाने लगी थी कि लड़कियों ने फिर मांगा। औरत ने खजूर के दो टुकड़े करके एक एक दोनों को दे दिया और चली गयी। मुझको उसकी हालत पर तअज्जुब हुआ। मैंने इसका जिक्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया। आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने उन दोनों लड़कियों के जरीये उस पर जन्नत वाजिब की और दोजख से आजाद किया। (मुस्लिम)

यतीमों जईफों और औरतों का हक

हजरत खुवैलिद बिन अम्र से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अल्लाह। मैं यतीमों, जईफों और औरतों के हक से डरता हूं। (नसई)

जईफों की बरकत से रिज्क

हजरत मुस्अब बिन सअद बिन अबी वक्कास (र०) से रिवायत है कि सअद को खयाल पैदा हुआ कि लोगों पर उनको फजीलत हासिल है। नबी (स०) ने फरमाया तुम्हारी जो मदद की जाती है। और तुमको जो रिज्क दिया जाता है वह तुम्हारे जईफों ही की बदौलत है। (बुखारी)

हजरत अबू दर्दा (र०) अुवैमिर से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है फरमाते थे कि मुझे कमजोरों में तलाश करो। कमजोरों की वजह से तुमको रिज्क मिलता है और उन्हीं की वजह से तुम्हारी मदद की जाती है। (अबूदाऊद)

(पृष्ठ ६ का शेष)

अजाब, अल्लाह ने उन के वास्ते तैयार कर रखा है, पस ऐ अक्ल वालो अल्लाह के अजाब और उस की पकड़ से डरो।

यह तो नुबूव्वत के पूरे सिलसिले को मानने और सब नबियों, रसूलों पर ईमान लाने के बारे में कुरआने–मजीद का उसूली मुतालबा (तकाजा) और उस के मुतअल्लिक तंबीहें (चेतावनियां) थीं। फिर खास इस दौर (काल) के लिए हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत और उस की खास विशेषता का एलान करते हुए –

सूरए–फतह में फर्माया गया –

तर्जमा : वही अल्लाह है कि उस ने अपने रसूलों को कामिल हिदायत और दीने हक (सच्चे धर्म) के साथ भेजा है, ताकि वह उस को सब दीनों (धर्मों) के ऊपर कर दे, और अल्लाह इस हकीकत का काफी गवाह है (और देखने योग्य आंखं रखने वालों के लिए उसकी यह गवाही जाहिर (स्पष्ट) है, अल गरज अब) मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के (आखिरी) रसूल हैं। (अलफत्ह : २८, २९)

और सूरए–मॉइदह में हज़रत मूसा (अ०) व हजरत ईसा (अ०) की नबूव्वत व रिसालत और तौरेत व इन्जील के नाजिल होने क जिक्र फर्माने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम पर नाजिल होने वाली ख़ुदा की किताब (कुरआने मजीद) की खुसूसियत (विशेषता) और इस की इम्तियाजी नौअियत (विशिष्ट तिथि) को इस तरह बयान फरमाया गया है।

तर्जमा : और अब हम ने अपनी यह किताब आप की तरफ हक्कानियत और सच्चाई के साथ उतारी है जो हमारी पहली किताबों की तसदीक (ताईद–पुष्टि) करती है, और उनका निगरां और मुहाफिज भी है, यानी पहले नाजिल होने वाली सब आसमानी किताबों की मोहकम (दृढ़) तालीम और उन का जौहर इस में शामिल कर के हमेशा के लिए महफूज कर दिया गया है। मानो अगले पैगम्बरों की समस्त तालीम के खुलासे की अस्ल नक्ल भी अब यही अलकिताब (कुर्आन) है।

●●●

हिन्दुस्तानी उलमा

और उनके इलमी कारनामे

मौ० अबुल हसन अली हसंनी नदवी

अगर इस विषय पर तफसील के साथ लिखा जाए तो पूरी किताब तैयार हो जाए, यहां पर बहुत संक्षिप्त के साथ लिखा जा रहा है ताकि अनुमान किया जा सके कि हमारे देश के एक एक आदमी ने इतना काम किया है जिसको पूरा करने के लिए एक अकादमी चाहिए, फिर काम इतना ऊंचा और स्टैण्डर का, विद्वान जगत ने उसे माना और सराहा और आज तक पढ़े लिखे लोग उससे फाइदा उठा रहे हैं।

महत्वपूर्ण पुस्तकों में "मुसल्लमुस सुबूत फी उसूलिल फिक्ह" के लेखक अल्लामा मुहिब्बुल्लाह बिहारी हैं इस किताब की दस शरहें (टीकाएं) लिखी गई हैं। इसी प्रकार एक बड़े हिन्दुस्तानी आलिम मौलाना मुहम्मद आला थानवी की किताब "कश्शाफु इस्तिला हातिल फुनून" बहुत ही लाभदायक और मान्य योग्य पुस्तक है, अरबी जगत में तमाम अहले इल्म ने उसकी प्रशंसा की है यह ज्ञानात्मक परिभाषाओं की पूरी डिक्शनरी की हैसियत रखती है जो हज़ारों पेज और सैकड़ों किताबों की छान बीन से बचा लेता है। इससे पहले इस विषय पर कोई अच्छी किताब मौजूद न थी, आज तक यह किताब इस विषय पर काम करने वालों के लिये रिफ्रेंस बुक है। इसी विषय पर एक और किताब मौलाना अब्दुन नबी अहमद नगरी की "जामिउल उलूम" है इसे दस्तुरूल उलमा के नाम से याद किया जाता है, पूरी किताब चार भागों पर संयुक्त है। बड़ी किताबों की सूची में महत्वपूर्ण बड़ी किताब हजरत शाह वली उल्लाह देहलवी की मास्टर पीस किताब "हुज्जतुल लाहिल बालिग़ा" है जिसमें शरीअत इस्लामी के फलसफा और अहकामे शरीअत के मुजमरात (रहस्य) से बहस की गई है, यह किताब अपने विषय पर बिलकुल अद्वितीय है, अरबी जबान अपने फैलाव के बावजूद इसकी नजीर पेश करने से आजिज़ है, विज्ञानों ने इस किताब की बड़ी प्रशंसा की है और यह किताब कई बार मिस्र से छप चुकी है।

अल्लामा सैयद मुरतजा बिलग्रामी जो ज़बेदी के नाम से मशहूर हैं, इनकी मशहूर किताब "ताजुल उरूस फी शरहिल क़ामूस" प्रशंसा और परिचय से परे है, दस भारी पुस्तकों और बारीक मिसरी टाइप के लगभग पांच हजार पृष्ठों पर निर्धारित यह किताब अरबी शब्द कोष के विषय में पूरी पुस्तकालय की हैसियत रखती है, अरबी भाषा के शब्द कोष पर किसी भारतीय विद्वान का कलम उठाना ही बड़े साहस का काम था, लेखक के जीवन ही में इस पुस्तक ने विश्वव्यापी ख्यात प्राप्त कर ली थी कि तुर्की के बादशाह ने उसकी एक प्रति नकल कराकर मंगाया इसके अलावा सुलतान दारे फौर और सुल्तान मराकश ने भी एक एक प्रति प्राप्त की मिस्र के मशहूर फौजी लीडर और विद्या मित्र रईस मुहम्मद बिक ने भी एक प्रति अपने पुस्तकालय के लिए एक हज़ार रियाल खर्च करके प्राप्त किया।

इसी प्रकार हमारे देश भारतवर्ष में अरबी के ऐसे लेखक गुजरे हैं जिनकी मिसाल पूरे इस्लामी जगत में नहीं मिलती है, भोपाल के नवाब सिद्दीक़ हसन खां जिनकी किताबों की संख्या २२२ है जिनमें अरबी की किताबें ५६ है जो अपने विषय पर बहुत ही लाभ दायक और ज्ञानपूर्ण हैं।

आख़िरी ज़माने में मौलाना अब्दुल हई फिरंगी महली की किताबों की संख्या एक सौ दस है जिनमें से छियासी किताबें अरबी भाषा में है। उलमा–ए–अहनाफ़ के तज़किरे में उनकी किताब "अल फवाइदुल बहीयह" सबसे मशहूर और मक़बूल किताब है और हनफ़ी उलमा के हालात के लिए जियादातर इसी किताब से काम लिया जाता है। हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ अली थानवी (रह०) की लिखी हुई किताबों की संख्या नौ सौ दस है उनमें से १३ किताबें अरबी में है।

इस्लामी लेखकों के हालात का महान कोष : मौलाा महमूद हसन खां टोंकी ने इस्लामी लेखकों का परिचय संबंधित एक बहुत बड़ी किताब "मोजमुल मुसन्निफीन" के नाम से लिखी है, उसकी हैसियत एक इनसाई किलोपेडिया की है,साठ प्रतियों और बीस हजार पृष्ठों पर सम्मिलित इस किताब में चालीस हजार लेखकों के हालात दर्ज हैं, किताब के फैलाव का अनुमान इससे होगा कि मुअल्लिफ (संग्रहकर्ता) ने दो हजार ऐसे लेखकों के हालात जमा किये हैं जिनका नाम अहमद है, इस किताब में डेढ़

हज़ार किताबों का इत्र (पुष्पसार) है। इस किताब के केवल चार भाग हुकूमत हैदराबाद के खर्च पर बेरूत में छप चुके हैं।

वर्तमान काल के महान लेखक:

वर्तमान काल के महान लेखकों और साहित्यकारों में सबसे ऊंचा नाम मौलाना सैयद सुलैमान नदवी (रह०) का नाम आता है, जिन्होंने सीरते नबवी, शरीअत इस्लामिया, तारीख़ इस्लाम और अदब (साहित्य) में बहुमूल्य और उच्च कोटि की किताबें प्रस्तुत की हैं, सय्यद साहब मरहूम की छपी हुई किताबों के पृष्ठों की संख्या सात हजार पृष्ठों से अधिक है, "मासिक मआरिफ" में जो भारत वर्ष का उच्चि कोटि का इस्लामी पत्रिका है, बहु मूल्य निबन्ध और इल्मी मसाएल पर भरपूर टीका टिप्पणी किताबों के अलावा है, इतने विशाल इल्मी अदबी कारनामों को देखते हुए मौलाना सैयद सुलेमान नदवी (रह०) बिला शुबहा ऐशिया के एक महान अन्वेषक और उच्चि कोटि लेखक और साहित्य कार हैं।

विशाल अध्ययन, बड़े लेखक होने की वजह से मौलाना स० मनाजिर अहसन गीलानी का नाम भुलाया नहीं जा सकता, अन "नबीयुल ख़ातम" "तदवीन हदीस", इस्लामी मआशियात और "मुसलमानों का निज़ामे तअलीम" व तरबियत" मौलाना मरहूम की महत्वपूर्ण किताबें हैं। मौलाना मरहूम अपने तेज और बहते हुए क़लम से एक पूरा पुस्तकालय तैयार कर गए है।

फन्ने हदीस और हिन्दुस्तानी उलमा

हिन्दुस्तानी उलमा उलूम दीन की खिदमत करने में बहुत मशहूर हैं, बड़ी मेहनत और लगन से काम किया, खास तौर पर हदीस के पढ़ने पढ़ाने और हदीस की शरह और तफसीर में उनका मुकाम बड़ा बुलन्द हुआ और इस फनकी कियादत और इमामत उनके हिस्से में आई।

अल्लामा सैयद रशीद रजा मिसरी एडीटर "अल–मनार" ने मिफ़ताहुल कुनज़िस सुन्नह" के मुकदमे (भूमिका) में हिन्दुस्तानी उलमा की खिदमात का एतिराफ (स्वीकृति) इन शब्दों में किया है "अगर हिन्दुस्तानी उलमा उस ज़माने में उलूम हदीस की तरफ़ तवज्जुह न करते तो यह फन मशरकी दुनिया से रूखसत हो जाता क्योंकि मिस्र, शाम, इराक और हिजाज़ में दसवीं सदी हिजरी ही से इल्म हदीस पतनशील हो गया है।"

संक्षिप्त में हदीस के कुछ बड़े–बड़े उलमा के नाम लिखते हैं –

हजरत शेख अब्दुल हक मुहदिदस देहलवी, हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी, मौलाना मुहम्म अशरफ डयानवी मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी, मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी शेखुल हदीस मौलाना मोहम्मद जकरया कांधलवी, मौलाना अनवर शाह कशमीरी।

मौलाना ज़हीर अहसन शौक नीमवी, जिनके बारे में मौलाना अनवर शाह कशमीरी फरमाते थे कि तीन सौ बरस से हिन्दुस्तान में इस पाए का मुहदिदस पैदा नहीं हुआ।

●●●

मुनाजात

खैरुन्निसा बेहतर

हुई जो दर तक तेरे रसाई,
तो तुझ से सुवाल भी है।
तू देने वाला करीम भी है,
तू कादिरे ज़ुलजलाल भी है।।
तू ही तो करता करम है सब पर,
तूही है मूनिस तू ही है रहबर।
करीम तू है रहीम तू है,
करम भी है और जलाल भी है।।
ये शान देखी तेरी निराली
जो तुझ से मांगे तू उससे राज़ी।
बुला के देना करम है तेरा,
ये फ़ज़्ल भी है, कमाल भी है।।
इलाही सदक़ा करम का अपने,
जहां के ग़म से मुझे बचाले।
कि फ़िक्र से दिल मेरा हज़ीं है,
तबीअत अपनी निढाल भी है।।
यहां पे इक दम नहीं अमां है,
बहार भी है तो पुर ख़िजां है।
अगर है राहत तो पुरफ़ुगां है,
कि इस को इक दिन ज़वाल भी है।।
कभी अलम है कभी हैं फरहत,
कभी है राहत कभी मुसीबत।
यहां की हालत नहीं है यक्सां,
ख़ुशी भी है और मलाल भी है।।
इलाही तुझ से मेरी दुआ है,
तुझी से हर दम ये इल्तिजा है।
है तेरी ही शान सब से अअला,
सिफ़त तेरी बेमिसाल भी है।।

स्वतंत्रता दिवस

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

हर देश की यह परम्परा है कि वहाँ कुछ यादगारें (स्मृतियां) क़ौमी सतह (राष्ट्र स्तरों) पर मनाई जाती हैं। उन्हीं में से स्वतंत्रता दिवस (यौमे आज़ादी) भी हैं। यहाँ अपने पाठकों से यह चाहूंगा कि वह ध्यान दें कि कौन–कौन देश स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाते हैं। और कौन–कौन देश स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं? जो नहीं मनाते तो उस का क्या कारण है? मेरे निकट तो स्वतंत्रता दिवस मनाने का मतलब है अपनी पराधीनता (ग़ुलामी) को याद करना मुझे तो इस में दो ख़राबियां दिखती हैं, एक यह कि अपनी या अपने पुर्खों की दासता (ग़ुलामी) याद करना कोई अच्छी बात तो नहीं हैं। इस को आप इस प्रकार समझें कि हम अपने पुर्खों का हाल तो नहीं जानते लेकिन अपने बचपन में कुछ ऐसे भाइयों को देखा हैं जिन के यहाँ ग़रीबी से फ़ाक़े हो जाते थे, जब हम जाड़ों में सुबह के वक़्त धूप में बैठकर अपना नाश्ता खाते थे तो वह भाई जिन के आज लाखों रूपये बैंक में बैलेन्स हैं मेरे नाश्ते को ललचाई निगाहों से देखते थे और जब मैं उस में से कुछ उन की ओर बढ़ा देता तो फ़ौरन लेकर खाने लगते आज मैं उनको वह दिन याद दिलाने का साहस नहीं रखता न उनको उस की याद भली लगेगी। फिर मैं नहीं समझ पाता कि यह ग़ुलामी की याद प्रसन्न करने वाली बात हैं या दुख देने वाली बात है कि हमारे पुर्वज ग़ुलाम (दास) थे, इस तिथि को स्वतंत्र हुए। दूसरी ख़राबी यह है कि जब हमारा देश ग़ुलाम था तो कोई इसे ग़ुलाम बनाए हुए था, जो ग़ुलाम बनाए हुए था वह साम्राज्य (इस्तिअ़मार) था, अत्याचारी था, उस अत्याचारी देश को याद करने पर उसके विरूद्ध क्रोध भड़केगा जब कि आज जगत के समस्त देश एक दूसरे के मित्र बनना चाहते हैं, लेकिन जो भी हो संसार के बहुत देशों में जो पहले ग़ुलाम थे अब आज़ाद हैं वह अपना योमे आज़ादी (स्वतंत्रता दिवस) घूम–धाम से मनाते हैं। और सत्य यह है कि इस रस्मी ख़ुशी में न कोई ग़ुलामी को याद करता हैं न साम्राज्य की शत्रुता को सोचता है बस सब म्युज़िक बजाते हैं, चिरागाँ (दीप प्रकाशन) करते हैं शराब कबाब उड़ाते हैं, नाचते हैं गाते हैं नाना प्रकार से खुशियाँ मनाते हैं।

आज़ादी की उपमा इस प्रकार दी जाती हैं कि एक जंगली चिड़िया सोने का पिंजड़ा और उस में निर्भय होकर मिलने वाले दाना पानी का अवसर पाते ही त्याग कर जंगल की राह लेती हैं। मनुष्य की आज़ादी की उपमा चिड़िया के जंगल में आज़ाद फिरने से देना उचित नहीं लगता चिड़िया की आज़ादी मानव की बुद्धियुक्त स्वतंत्रता में कोई जोड़ ही नहीं हैं। मनुष्य तो पग–पग पर अपने नियमों का ग़ुलाम है, किसान अपने खेत की मेहनत से आज़ाद नहीं, मज़दूर अपने श्रम से आज़ाद नहीं, क्लर्क अपनी ड्यूटी से आज़ाद नहीं, शिक्षक को नियमानुसार बड़ी सावधानी से तथा पूरे प्रतिबन्ध से शिक्षा देना है, विद्यार्थी को दिन रात एक करके शिक्षा ग्रहण करना है, वह इन कठिन परिश्रमों से कदापि स्वतंत्रता नहीं चाहता, व्यापारी (ताजिर) अपने व्यापार में, मशीनमैन अपनी मशीन चलाने में ग़रज़ कि देश का हर व्यक्ति अपने कार्य में लीन है, वह इस को ग़ुलामी नहीं समझता वह इन व्यस्तताओं से छुटकारे को स्वतंत्रता कदापि नहीं समझता फिर मानव स्वतंत्रता, चिड़िया के जंगल उड़ जाने की उपमा कैसे सिद्ध हो सकती है? हर पराधीनता को ग़ुलामी नहीं कह सकते आज कहा जाता हैं कि मुसलमान औरतें ग़ुलामी की ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं यह बिल्कुल ग़लत हैं वह तो समाज स्वच्छ रखने, समाज को शान्तिमय रखने के लिये कुछ उत्तम नियमों का पालन कर रही हैं, वैसे तो हम भी कह सकते हैं कि काम इच्छा मानव की प्रकृति है इसकी पूर्ति के लिये पति का नाता स्वीकृति करने का प्रतिबन्ध क्यों? तो हमारी यह बात ग़लत समझी जाएगी और ऐसी स्वतंत्रता पर हज़ार बार ला़नत (धिक्कार) जिस में स्त्री के लिये पति का प्रतिबन्ध उठ जाए जब कि कुछ देशों में इस प्रतिबन्ध को भी ग़ुलामी कहा गया है। चुनांचि एक साहिब ने योरोप की एक बात सुनाई कि एक ऑफिस में एक नव–युवक के साथ एक लेडी काम कर रही थी, एक सन्डे को उन लेडी जी ने नव–युवक को अपने घर चाय पर आमंत्रित किया, नव–युवक लेडी के घर पहुंचा तो घर

पर एक सज्जन से गुडमर्निंग का आदान प्रदान हुआ, लेडी जी सामने आईं और नवयुवक को अपने विशेष रूम में ले गईं चाय नाश्ते का अच्छा प्रबन्ध था साथ में ह्विस्की भी थी, एक घन्टे के मनोरंजन के पश्चात् जब नव युवक रूम से बाहर निकला तो वह सज्जन विद्यमान थे, उन्होंने शैक हैन्ड करते हुए आपत्ति की कि मुझे हंसमुख न देखकर आप बुरा न माने मैं ने इस से कह रखा था कि सन्डे, मेरे लिये सपरेट रखा करो परन्तु इस ने मेरी बात न मानी, वह सज्जन उस लेडी के पति थे। मैं कहता हूँ इस स्वतंत्रता से पहले देश धरती में समा जाए तो अच्छा है।

अतः श्रम से छुटकारा स्वतंत्रता नहीं हैं। नियमों के बन्धन से छुटकारा स्वतंत्रता नहीं है। बच्चों को स्कूल जाने से छूट दे देना और गुल्ली डन्डें में लग जाने की अनुमति दे देना स्वतंतत्रता नहीं है, किसी भी कार्यकरता को कार्य रहित कर देना स्वतंत्रता नहीं है अपितु यह तो बेकारी पैदा करना और आराजकता फैलाना है फिर स्वतंत्रता क्या हैं? जिस पर इतना उत्सव मनाया जाता हैं।

अभी वह समय देखे हुए लोग मौजूद हैं, उन में यह लेखक भी है जिन्होंने बिदेसियों का राज अपनी आखों देखा हैं। इस बात को आगे बढ़ाने से पहले मैं इस भ्रम को दूर कर देना चाहतू हूँ कि जो कुछ लोग कहते हैं कि आर्य भी विदेशी हैं तथा मुस्लिम भी विदेशी हैं, निसन्देह आर्य बाहर से आए यहाँ के मूल निवासी कोल, भलि द्रावड़ हैं, फिर मुसलमान विदेश से आए और अगर छानबीन की जाए तो सिद्ध हो सकता है कि द्रावड़ भी बाहर से आए, यह बाहर से आना उस समय के अनुसार हो चुका, फिर जब आर्यों ने, मुसलमानों ने इसे अपना देश बना लिया और उस पर शताब्दियां बीत गई तो अब हम उनको विदेशी कहें तो यह हमारी जियादती होगी, मुसलमानों ने यहाँ बड़े लम्बे समय तक राज किया, मुसलमान इस देश को अपनाकर यहाँ घुल मिल गये और इस देश को शिक्षा–दीक्षा में, खान–पान में, पहनावे में, भवन निर्माण में, रहन–सहन में, रीत–रिवाज में, राज प्रबन्ध में, सत्य–ज्ञान में, ईश ज्ञान में, प्रेम भाव में, इतना कुछ दिया कि उसे गिना नहीं जा सकता। मुसलमानों द्वारा आई उक्त सभ्यता जिस शुद्धता से आज भारत में विद्यमान है इस्लामी देश उन से वंचित हैं इस के पश्चात् भी मुसलमानों को विदेशी कहने वाले वास्तव में स्वयं अपने को पहचान नहीं पा रहे हैं।

अलबत्ता सात समन्दर पार से गोरे जिस प्रकार यहाँ आए और जिस प्रकार वह यहाँ के शासक बन गये और जिस प्रकार यहाँ के घन, उत्पादन और जन साधारण का शोषण किया उस की कहानी कुछ अलग ही हैं कोई भारती उन के साथ बैठकर यात्रा नहीं कर सकता था, उन के बराबर बैठ नहीं सकता था, वह भारत के उत्पादन को कौड़ियों के मोल इंग्लैण्ड भेजता और उसे पक्का कर के सोने के भाव भारतीयों को देता यहां का धन इंग्लैण्ड जा रहा था यहां की उन्नति का विचार सिरे से न था, लड़ाओ और शासन करो का नियम चालित था। परन्तु मैं पहले कह चुका हूँ कि इन बातों को याद करना गोरा देश से शत्रुता को जागृति करना हैं। जो अब हर एक को अप्रिय हैं। इस लिये इसका तनिक भी लाभ नज़र नहीं आता सिवाएं इसके कि भविष्य में अगर अपना देश फिर ग़ुलाम हो जाए (जो अब असम्भव हैं) तो देश को स्वतंत्रता दिलाने में अपने स्वतंत्रता नायकों से पथ प्रदर्शन लिया जाए।

स्वतंत्रता की लड़ाई बड़ी लम्बी चली, परन्तु इसका पहला लावा १८५७ में फूटा जिस में बहादुर शाह ज़फर को नेता माना गया था परन्तु कुछ अपनी भूल चूक, कुछ गोरों की चालकी इस आन्दोंलन को विद्रोह नाम देकर शक्त पूर्वक दबा दिया गया, उस समय यहाँ मुसलमानों का दुर्बल शासन था, मुकाबले में हिन्दू मुस्लिम दोनों की भारी संख्या वीरगति को प्राप्त हुई परन्तु मुसलमानों को जो जानी माली हानि हुई उसकी गिन्ती नहीं हो सकती कुछ इतिहासकारों का तो कहना है लाख मुसलमान से कम नहीं मारे गये और शाही रव़ान्दान के शहज़ादों और शहज़ादियों को जिस प्रकार क़त्ल किया गया इतिहस उसकी उपमा प्रस्तुत करने में असमर्थ है, फिर बहादुर शाह ज़फ़र को देश से निकाल कर रंगून में क़ैद किया गया और वहीं उनकी मृत्यु हुई इसी पर उन्होंने कहा था।

है कितना बदनसीब ज़फ़र
दफ़न के लिये
दो गज़ ज़मीं भी मिल न सकी
कूए यार में

यह टीपू सुल्तान की शहादत (१७९९) यह सय्यिद अहमद शहीद की जिहादी तहरीक, (१८३१) यह ख़िलाफ़त तहरीक (१९२५) यह सब गोरों की पराधीनता तथा उनके शोषण से

छुटकारा पाने ही की चेष्ठाएं थी। इन तहरीकों को दबाकर और कुचल कर अंग्रेज़ इसी धोखे में रहे कि हमारा वह शासन जिस में कभी सूर्यास्त नहीं होता उसको कोई मिटाने वाला नहीं परन्तु आज़ादी के मतवालों ने उनके इस दावे को ख़ाक में मिला दिया और उनको भारत छोड़ना पड़ा।

यहाँ मुझे तहरीके आज़ादी का इतिहास नहीं लिखना हैं लेकिन एक बात की ओर विशेषकर ध्यान दिलाना है वह यह कि इस अवसर पर जो भाषण होते हैं और जो लेख लिखे जाते है उन में स्वतंत्रता सेनानियों के वर्णन में मुस्लिम मुजाहिदीने आज़ादी नज़र अन्दाज़ हो जाते हैं जब कि गोरों के विरोध में मुसलमानों की क़ुर्बानी की संख्या का अनुपात हिन्दू भाइयों के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा है। निः सन्देह महात्मा गांधी जी राष्ट्र पिता तथा क़ौम के बापू बने और पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू हुए और यह उनका हक था लेकिन मुसलमानों में भी एक से बढ़कर एक थे, मौलाना अहमदुल्लाह, अज़ीमुल्लाह, इनायतुल्लाह, अली बिरादरान, डा० अन्सारी, अबुलकलाम आज़ाद, डा० सैफुल्लाह किचलू, हिफ़्ज़ुरहमान सिवहारवी, मुहमद, रफ़ी क़िदवाई, हसरत मोहानी आदि के नाम तो बड़ी व्याख्यात रखते हैं। वैसे जिसे अधिक जानकारी लेना हो तो इस विषय पर बहुत कुछ छपा हुआ मौजूद है, असरि अदरवी की किताब "तहरीक आज़ादी और मुसलमान" उर्दू में पढ़िये जाफ़र थानेसरी की "काला पानी" देखिये, हिन्दी में अभी एक किताब्चा (पुस्तिका). "आज़ादी की लड़ाई में भारतीय मुसलमानों का रोल" शान्तिमय राय, जी द्वारा छप चुका हैं, जिसे मुहम्मद हसन अंसारी, अहसन पब्लीकेशन्स, सरकुन्डा, सुलतानपूर ने छापा है, पढ़ने योग्य है। मुसलमान तो जो क़ुर्बानी देता है वह उस में नाम नहीं चाहता, उसकी क़ुर्बानी अल्लाह वास्ते है वह अपना बदला आख़िरत में चाहता है, लेकिन आज़ादी की लड़ाई में हिन्दू मुस्लिम सिख सभी शरीक है, अतः सभी स्वतंत्रता सेनानियों का हम पर हक बनता हैं कि हम उन की क़ुर्बानियों को याद करें और उनका शुक्रिया अदाकरें, स्वतंत्रता दिवस मनाने में यही सबसे बड़ा लाभ हैं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

" इन्नस्सलात तन्हा अ़निल् फहशाइ वल्मुन्कर" (बेशक नमाज गन्दी बातों और सारी बुरी बातों से रोक देती है) का फाइदा भी मुतवक़्क़िअ़ है।

ऐ अल्लाह हमारे नव जवानों को तौफ़ीक़ दे कि वह जो समझें उस पर अ़मल करें और दूसरों को हिक्मत और बेहतरीन मौअ़िजत से अ़मल की दअ़वत दें।

क़ुर्आन की तिलावत

क़ुर्आन ऊंची जगह रख कर अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिए और हर हर्फ़ (अक्षर) को उस के मख़रज से अदा करना चाहिए और हर लफ़्ज़ (शब्द) को सहीह पढ़ना चाहिए और हर आयत पर जहां ठहरना ज़रूरी हो ठहरना चाहिए । रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने इन तमाम बातों का हुक्म दिया है। ख़ुद क़ुर्आन में भी क़ुर्आन को तर्तील से यअ़नी ठहर ठहर कर पढ़ने का हुक्म आया है। क़ुर्आने मजीद जबानी पढ़ने से देख कर पढ़ने में ज़ियादा सवाब है। कुछ लोग नमाज़ के बअ़द मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़कार और वज़ीफ़े तो घन्टे आध घण्टे पढ़ते रहते हैं, लेकिन क़ुर्आन की तिलावत (पाठन) में दो चार मिनट भी नहीं लगाते ऐसा करना बहुत बुरा है। अल्लाह के कलाम से बढ़ कर कौन सा वज़ीफ़ा है? और यह बात बड़े तशवीश (चिन्ता) की है कि कुछ बुज़ुर्ग अपने मानने वालों को तिलावत यह कह कर रोक देते हैं कि पहले वज़ीफ़ों से मन की सफ़ाई कर लो फिर तिलावत करना ध्यान दीजिए क़ुर्आन से बढ़ कर और किस वज़ीफ़े से मन की सफ़ाई होगी? फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कि नमाज़ में क़ुर्आन का पढ़ना अफ़ज़ल है नमाज़ के बाहर क़ुर्आन पढ़ने से, और नमाज़ के बाहर की किराअत तस्बीह व तक्बीर से अफ़ज़ल है। (मिशकात)

मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह०

धूम्रपान, तम्बाकू के ख़िलाफ़ मुहिम

ज़हीर ललितपुरी

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ० अंबुमणि रामदास के उस ऐलान का स्वागत किया जाना चाहिए, जिसके ज़रिये वे धूम्रपानऔर तम्बाकू सेवन के ख़िलाफ़ मुहिम की शुरुआत करने जा रहे हैं, और सिर्फ़, उनके ऐलान का स्वागत ही नहीं बल्कि उनका पूर्ण सहयोग करना चाहिए। क्योंकि ये नशावर चीज़ें इन्सान को कैंसर जैसी ख़तरनाक बीमारी के चंगुल में तो फंसा ही देती है लेकिन उसके स्वास्थ्य पर और भी कई तरह से बुरे असर डालती हैं। साथ ही साथ इन्सान की मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति को भी बुरी तरह प्रभावित करती हैं। चूंकि सरकारी स्तर पर चलायी जाने वाली काग़ज़ी योजनाएं मज़बूत इच्छाशक्ति, साफ़ नीयत और स्पष्ट नीति के आभाव में, उनका क्रियान्वयन सही तरीक़े से न हो पाने की वजह से, अपने मक़सद में अक्सर कामयाब नहीं हो पातीं हैं। इसलिए इन बुराइयों के ख़िलाफ़ व्यापक जन–समर्थन और जन–सहयोग की ज़रूरत है।

धूम्रपान एवं तम्बाकू के ख़िलाफ़

इस कथित मुहिम के दौरान हमारे स्वास्थ्य मंत्री कई महत्वपूर्ण क़दम उठाने जा रहे हैं। वे, आगामी एक जून से, तम्बाकू उत्पादों एवं सिगरेट के सभी पैकेटों पर कैंसर के भयानक चित्रों को छापना अनिवार्य करने जा रहे हैं। इसका मक़सद लोगों को, तम्बाकू उत्पादन ख़रीदते समय, उसके ख़तरों के प्रति आगाह करना है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने तम्बाकू से होने वाली बीमारियों और कैंसर के एक दर्जन से भी ज़्यादा भयानक चित्रों की श्रृंखला तैयार कर ली है, जिसे सभी तरह के तंबाकू उत्पदों सिगरेट आदि के पैकेटों पर छापना अनिवार्य किया जाएगा।

लोगों में चेतना पैदा करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस के मौक़े पर हर साल ३१ मई को तंबाकू विरोध पुरस्कार दिये जाएंगे। इसके तहत, तंबाकू के इस्तेमाल को रोकने वाले लोगों, संस्थाओं और राज्य सरकारों को चार श्रेणियों में पुरस्कृत किया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्रालय तंबाकू की रोकथाम, के लिए एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम की शुरुआत करने पर भी विचार कर रहा हैं। उसकी योजना के अनुसार, तंबाकू विरोधी क़ानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण बनाया जाएगा। इसके साथ ही तंबाकू पर कर बढ़ाने आदि को लेकर भी अन्य महकमों से विचार विमर्श हो रहा है।

वास्तव में तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि धूम्रपान के साधनों के सेवन के ख़िलाफ़ क़ानून बनाये जाएं और कोई मुहिम अगर कारगर तरीके से चलायी जाए तो इन्सानियत के लिए बहुत लाभदायक साबित होगी। क्योंकि इनके सेवन से इन्सान के स्वास्थ्य एवं जीवन पर बहुत ही घातक प्रभाव पड़ते हैं। भारत में कैंसर के ४० प्रतिशत मामलों के लिए तंबाकू ज़िम्मेदार है। मुंह के कैंसर के १६ फ़ीसदी मामले सिर्फ़ तंबाकू सेवन में हुए हैं। आलम यह है कि देश में प्रतिदिन तंबाकू जनित बीमारियों के कारण २००० लोगों की मौत होती हैं। कैंसर जैसी बीमारी जहां एक तरफ़ कैंसर पीड़ित व्यक्ति के लिए अत्यधिक तकलीफ़देह होती है, तो दूसरी तरफ़ उस व्यक्ति को आर्थिक रूप से काफ़ी नुक़सान पहुंचाती हैं। यहां तक कि उसके परिवार व क़रीबी रिश्तेदारों तक को आर्थिक रूप से परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं।

दुर्भाग्य से तंबाकू, बीड़ी, गुटके का इस्तेमाल करने वालों में गरीब, मजदूर और मध्यवर्गीय परिवारों के लोग, ख़ासकर नवजवानों की संख्या अधिक है। प्रायः देखा जाता है कि इस वर्ग के बच्चे, किशोर, लड़कियां और महिलाएं भी बहुत बड़ी संख्या में तंबाकू और गुटके का प्रयोग करती पायी जाती हैं। उन ग़रीबों की, खून–पसीने से अर्जित की गयी आय का बहुत बड़ा हिस्सा तंबाकू, गुटका, बीड़ी, सिगरेट आदि के इस्तेमाल में ख़र्च हो रहा है, जो निर्धन बस्तियों में, गांवों में, शहरों के फुटपाथों पर मिल जाते हैं। आजकल हर जगह, निर्धन बस्तियों में, गांवों की गलियों में, शहरों के फुटपाथों पर, फेक्ट्रियों के आस–पास, गुमटियों, खोखों और पटरी दुकानों पर गुटकों और तंबाकू की पुड़ियों तथा बीड़ी के बंडल बिकने के लिए नज़र आते हैं।

सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, बैंकों आदि के आस–पास इन चीज़ों

की बिक्री के लिए गुमटियों और खोखे रखे नज़र आते हैं। इनके भवनों की दीवारों पर और सारे कोनों में पान तंबाकू की पीकों की छापें तथा इधर–उधर पड़ी हुई पुड़ियें, खाली फटे पैकिट, सिगरेट–बीड़ी के अधजले ठूंठ इस बात की गवाही देते हैं कि इन चीज़ों ने हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी और कार्य संस्कृति में किस क़दर अपनी पैठ बना ली हैं। ये इन्सान के शरीर के अन्दर पहुंच कर भी उसे खोखला करती है और बाहर से इनके रेपरों के कूड़े और पान की पीक से जमा होने वाली गन्दगी में पैदा होने वाले कीटाणुओं की फ़ौज हमारे शरीर पर हमला करने को तैयार रहती है। ये कीटाणु सिर्फ़ तंबाकू आदि का सेवन करने वाले इन्सानों को ही नुकसान नहीं पहुंचाते बल्कि इनसे दूर रहने वाले लोगों को भी प्रभावित करते हैं। इसी तरह सिगरेट–बीड़ी का धुआं, पीने वालों के कलेजों को तो छलनी करता ही है, साथ ही आस–पास बैठकर सांस लेने वाले उन इन्सानों के सीनों में भी पहुंच जाता है जो सिगरेट बीड़ी कभी नहीं पीते हैं।

धूम्रपान करने वाले अपने आपको तो, नुकसान पहुंचाते ही हैं लेकिन अपने साथ–साथ पूरे समाज को भी नुक़सान पहुंचाते हैं। इनके प्रयोग से, इनका प्रयोग करने वालों के शरीर के अन्दर रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती हैं। विभिन्न बीमारियां जल्दी ही ऐसे व्यक्तियों के शरीर को अपना शिकार बना लेती है। ऐसे व्यक्तियों के शरीर पर दवाओं का असर देर से पड़ता है और छोटी–सी बीमारी अधिक ख़र्च में ठीक हो पाती हैं। यद्यपि इनका सेवन न करने वालों की तुलना में सेवन करने वालों की बीमारी आदि का ख़र्च अधिक होता हैं लेकिन किसी न किसी तरीक़े से इसका प्रभाव पूरे समाज पर ही पड़ता है। इसलिए इनके प्रचलन को रोकना पूरे समाज के हित में हैं। सरकार द्वारा किये जाने वाले प्रयासों ने इनके प्रयोग को कुछ हद तक रोका जा सकता हैं किन्तु सम्पर्ण समाज को इन बुरी चीज़ों के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए सामाजिक और धार्मिक स्तर पर भी प्रयास होना ज़रूरी हैं।

एक समय था जब बहुत कम लोग तंबाकू का उपयोग करते थे और उम्र में छोटे लोग अपने से बड़ों के सामने इनका इस्तेमाल नहीं करते थे और नवजवान छुप–छुपकर बीड़ी–सिगरेट पिया करते थे। सामाजिक भय उन्हें रोकता था। इससे उन्हें असुविधा होती थी जिस वजह से इनका प्रचलन काफ़ी कम था। बड़े भी छोटों के सामने इनका प्रयोग नहीं करते थे इसलिए छोटे लोगों पर इनका असर नहीं पड़ता था। जब कोई बच्चा, किशोर या नवजवान बीड़ी, सिगरेट या तंबाकू पीता देखा जाता था तो समाज के बुजुर्ग उसको डॉटते थे। किन्तु आधुनिक विलासता और व्यावसायिकता के दौर में जबकि मर्यादाएं टूट रहीं हैं, इनका प्रयोग आम बात हो गयी है।

अधिक से अधिक धन कमाने के लालच में इनको बेचने वाले छोटे दुकानदारों और होलसेल डीलरों एवं कंपनी मालिकों ने प्रचार–प्रसार के साधनों के ज़रिये इस प्रकार का वातावरण तैयार कर दिया कि इनका इस्तेमाल फैशन बन गया। शादी–विवाह व दूसरे पारिवारिक समारोहों में तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट के ज़रिये स्वागत सम्मान करना आवश्यक परम्पराओं में शामिल हो गया। लेकिन इसके बावजूद आज भी इसका सेवन समाज में सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा जाता और इनका सेवन करने वालों को समाज मं अच्छा नहीं समझा जाता। आज भी संभ्रांत और सुसंस्कृत लोग खुलेआम अपने से उम्र में बड़े लोगों के सामने इनका इस्तेमाल करने में हिचकते हैं। सामाजिक दृष्टि से पहले की तरह इनका बहिष्कार किया जाए तो इसका अच्छा असर पड़ सकता है। परिवार में तथा परिवारिक समारोहों में इन पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा ही दिये जाने चाहिए जो कि संभव हैं।

धार्मिक दृष्टि से भी इनके प्रयोग को उचित नहीं ठहराया जा सकता और यदि धार्मिक रूप से लोगों को जागरूक किया जाए तो इनकी रोकथाम में काफ़ी मदद् मिल सकती हैं क्योंकि भारतीय समाज पर आज भी धर्म गुरुओं का काफ़ी प्रभाव हैं। इस्लामी सिद्धांतों में इनको रोकने के पर्याप्त आधार उपलब्ध हैं। यद्यपि तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी आदि के सेवन को इस्लाम धर्म में उस प्रकार हराम क़रार नहीं किया गया जिस प्रकार शराब के पीने, पिलाने, बनाने और बेचने को हराम क़रार दिया गया हैं। लेकिन इस्लाम की इस संबंध में दी गयी शिक्षाओं का अध्ययन किया जाए तो इन चीज़ों के इस्तेमाल की गुंजाइश कहीं से नहीं निकलती है।

इस्लामी शरीअत का एक सामान्य नियम यह है कि इन्सान के लिए ऐसी वस्तुओं का खाना–पीना

जायज़ नहीं है जो उसे तुरन्त या धीरे–धीरे उसे हलाक कर दे। दुनिया के मालिक अल्लाह ने ऐसी तमाम नशीली चीज़ों को हराम क़रार दिया है जो इन्सान की बुद्धि पर असर डालती हैं। शराब, गॉजा, चरस, हीरोइन, मदन मुनक्का, धतूरा और स्मैक आदि ऐसे नशे हैं जो इन्सान को, इनका इस्तेमाल करते ही, पागल–सा बना देते हैं और इन्सान की हालत बहुत ख़राब हो जाती हैं। वह इनका इतना आदी हो जाता हैं कि इनसे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है और ये इन्सान के शरीर को बड़ी तेजी से खोखला करना शुरू कर देते हैं। एक बार इनके नशे की लत पड़ जाए तो जान लेकर ही जाती हैं। इसलिए इनका सेवन इन्सान के लिए स्पष्ट रूप से हराम कर दिया गया हैं। तंबाकू आदि धूम्रपान भी इन्सान की बुद्धि और स्वास्थ्य पर धीरे–धीरे असर डालते हैं इसलिए इनके सेवन को भी उचित नहीं ठहराया जा सकता।

इन्सान का शरीर ईश्वर की अमानत है। एक इन्सान मुसलमान हो या गैर हो, उसका शरीर ही नहीं, उसकी आत्मा, उसका जीवन, स्वास्थ्य, उसका माल और अल्लाह की दूसरी सारी नेमतें उसके पास धरोहर होती हैं। किन्तु एक मुसलमान का तो दीन और उसकी मिल्लत तक अल्लाह की अमानत है। वह सारी इन्सानियत का रहनुमा है। इसलिए सबसे पहले उसकी यह ज़िम्मेदारी है कि वह उन कार्मों से और उन चीजों के खाने–पीने से परहेज़ करे जो उसके शरीर, स्वास्थ्य, आस्थाओं, इबादतों, आर्थिक और सामाजिक स्थिति को नुक़सान पहुंचाती है तभी वह दूसरे इन्सानों को इन बुराइयों से बचा सकता हैं। कुरआन में अल्लाह का आदेश हैं कि–"और अपने आपको क़त्ल न करें। निस्संदेह अल्लाह तुम पर दयालु हैं।" (निसा:२९)

"और अपने हाथों अपने आपको हलाकत में न डालों।" (बक़रा:१९३)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस बाबत फ़रमाया है कि "क्षति पहुंचाना, अपनी तमाम शक्लों के साथ, नाजायज़ है" (इब्ने माजा)। इस प्रकार, उपरोक्त आयात और हदीस की रोशनी में, इस्लामी दृष्टिकोण से, तम्बाकू व धूम्रपान के प्रयोग को उचित नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि डॉक्टरों और चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञों ने इन्सान के स्वास्थ्य के लिए नुक़सानदेह साबित कर दिया हैं। नबी (सल्ल०) ने माल की फ़ुजूल ख़र्ची से मना फ़रमाया है, ख़ासकर इस दौर में जबकि आम मुसलमानों को बहुत सारी आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। बेरोज़गार और ग़रीब मुसलमानों का तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, गुटके आदि पर व्यर्थ में धन बर्बाद करना फ़ुजूलख़र्ची नहीं तो और क्या है। लेकिन अमूमन देखा जाता है कि मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद इन चीजों का सेवन करके अपने आपको हलाकत में डाल रही हैं।

वस्तुतः धूम्रपान एवं तंबाकू आदि का सेवन, हर दृष्टि से पूरे इन्सानी समाज के लिए नुक़सानदेह हैं। इसलिए स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा, इनके सेवन के ख़िरूद्ध चलायी जाने वाली मुहिम की घोषणा सराहनीय है। यद्यपि इस मुहिम की कामयाबी के लिए सर्वप्रथम इनकी बिक्री पर पाबन्दी लगायी जानी चाहिए। इस संबध में सरकार के पास कोई योजना नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री का ही नहीं, हर ज़िम्मेदार नागरिक का ये कर्तव्य है कि वह इन बुरी चीज़ों की रोकथाम के लिए भरसक प्रयास करे। आने वाली नस्लों के लिए, हम वर्तमान में अगर कांटे बोएंगे तो वे कभी हमें माफ़ नहीं करेंगे। ईश्वर अपनी नेमतों के दुरुपयोग और अपनी अमानतों के प्रति इस कदर लापरवाही के बद ो में हमें बहुत से अज़ाबों में डाल सकता है। इसलिए आने वाली नस्लों, अपने राष्ट्र, समाज और पूरी इन्सानियत की भलाई के साथ अल्लाह की नाराज़गी से बचने के लिए हमें इस ओर ज़रूर प्रयास करने चाहिए।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

कुरआन में भी बार–बार इसकी ओर ध्यान दिलाया गया है –

"फिर क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि वे ईमान वाले हो जाएं।" (कुर्आन, १०:९९)

दूसरे स्थान पर अल्लाह नबी (सल्ल०) से कहता है –

"अच्छा तो (हे नबी) नसीहत किये जाओ तुम बस नसीहत ही करने वाले हो, कुछ इनको बाध्य करने वाले नहीं हो।" (कुर्आन, ८८:२१–२२)

कुरआन में अंतःकरण की स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया और दीन के मामले में जोर–जबरदस्ती करने से मना किया गया है। जेम्स ए० मिचेनर लिखते हैं –

"इतिहास में दूसरा कोई धर्म नहीं है, जो इस्लाम जैसा तेजी से फैला हो..... । पश्चिम के लोग यह विश्वास करते हैं कि धर्म का विस्तार तलवार के जरिये संभव हुआ। लेकिन कोई आधुनिक विद्वान उसे नहीं स्वीकार करता। कुरआन अंतःकरण की स्वतंत्रता का खुला हिमायती है।"

क़दरें (मान्यताएं) बदल रही हैं

अबू मर्ग़ब

अभी हमारे बचपन में यह हाल था कि शादी शुदा जोड़ा एक दो बच्चों का बाप हो जाता घर के लोग कभी दोनों को एक चारपाई पर बैठा न पाते शादी के पश्चात् मियां बीवी का एक साथ बैठना हंसना बोलना बुरा न था, बल्कि न बोलना बुरा था मगर उस वक़्त की यही कदरें (मान्यताएं) थी। रात गये जब बच्चे सो जाते तो मिया बीवी कोठे पर चले जाते और घर के बच्चों के जागने से पहले नीची आ जाते। जूँ जूँ इल्म आम होता गया यह बनावटी क़दरें ख़त्म होती गईं और शादी के तुरन्त बाद शादी शुदा जोड़ा बे तकल्लुक हो जाने लगा परन्तु रात के मियां बीवी के विस्तार का वर्णन अब तक अप्रिय रहा।

मियां बीवी के मिलाप की कहानी का बयान स्वच्छ समाज में अब तक अप्रिय हैं इसी प्रकार आज भी कोई शिष्ट बाप या भाई अपनी बीटियों बहनों के सामने मैगज़ीन्स और समाचार पत्रों में छपी सुन्दीयों के चित्र पर कोई टिप्पड़ी नहीं कर पाता है बल्कि मिश्रित कॉलेजों में भी कोई मर्द टीचार अपनी छात्रा की उपस्थिति में अपने छात्रों को सम्बोधित करके भी सुन्दीयों के चित्रों की प्रशंसा करने का भी साहस नहीं कर सकता अब तक शासकीय स्कूलों के पाठ्यकम में माध्यमिक शिक्षा तक कोई ऐसा पाठ नहीं है जिस में योन प्रेम की कथा का वर्णन हो। मदरसों की इस्लामी तअ़लीम में वुज़ू ग़ुस्ल के बयान में जहां लज्जा अंगों का उल्लेख आता है तो उस्ताद संकेतों की भाषा से काम लेता है वुज़ू और ग़ुस्ल के मसाइल मर्द मुअ़ल्लिम छात्राओं को नहीं पढ़ाते है, उन मसाइल को बच्चियों को समझाने के लिये किसी स्त्री टीचर ही को कष्ट दिया जाता है। यह बात तो छोटी बच्चियों अर्थात् अव्यस्क छात्राओं के सम्बन्ध, में हुई, लड़कों को पढ़ाने में भी लज्जा का पूरा ध्यान रखा जाता है, निः सन्देह शैख़ सअ़दी ने अपनी गुलिस्ताँ द्वारा समाज विज्ञान सिखाया हैं और यह किताब आज भी बहुत से मदरसों में पढ़ाई जाती है परन्तु आप पता लगा डालें पांचवा बाब (जो योन शास्त्र पर है) कोई उस्ताद अपने छात्रों को नहीं पढ़ाता है, विद्यार्थी उसे स्वयं पढ़ लेते हैं। हमारे नदवतुल उलमा के दारूल उलूम में कुछ विवेकी छोटे बच्चे सिउम अ़रबी (जो अब सानवीया राबिआ कहलाता है) में पहुंच जाते हैं इस दर्जे में फ़िक़्ह में अ़रबी किताब "नूरूलईज़ाह" पढ़ाई जाती थी जिस में वुज़ू व ग़ुसल के व्यस्कों के मसाइल हैं जिन को पढ़ाते हुए उस्ताद भी शर्माते हैं और विद्यार्थी भी आख़िरकार आचरण विशेषज्ञ आचार्यों ने निर्णय लिया, और तै किया कि हमारे यहाँ जिस कक्षा में यह किताब पढ़ाई जाती है उसमें छोटे बच्चे होते हैं उनको इस किताब का पढ़ाया जाना उचित नहीं है, अतएव उस किताब के बदले में उस कक्षा के लिये अपने विशेषज्ञ अध्यापक मौलाना शफ़ीक़ुर्रहमान (रह०) द्वारा "अलफ़िक़्ह अल मुयस्सर" लिखवाई, और अब इस कक्षा में यही किताब पढ़ाई जाती है।

इन आदर्श मान्यताओं तथा सावधानियों के होते हुए नव व्यस्कों को जितना संभालना पड़ता है जितनी उनकी देख–भाल करनी पड़ती है इसको सभी जानते हैं, फिर भी जिस प्रकार की घटनाएं घटती रहती हैं उन का हाल सज्जन गार्जियनों तथा माध्यमिक शिक्षा के सभ्य अध्यापकों विशेषकर बोर्डिगों के वार्डनों से पूछये। फिर क्या हाल होगा उस समय जब माध्यमिक विद्यालयों में योन शिक्षा दी जाएगी। क्या आप फिर भी आशा करेंगे। कि व्यभचार और गुदा मैथुन में कमी आए, फिर भी आप चाहेंगे कि अव्यस्काओं के साथ अपराध करने वालों को फांसी दी जाए। जेल भेजा जाए? फ़ारसी का एक शिअ़्र है जिसे शाअ़िर ने तो किसी और अवसर के लिये कहा था लेकिन ऐसा समाज जिसके अव्यस्कों को विद्यालयों में योन शिक्षा दी जाए उस पर यह शिअ़्र पूरा सिद्ध होता हैं:–

दरमियाने कअ़रे दरया
तख़्ता बन्दम कर्दई
बाज़ मी गोई कि दामन
तर मकुन हुश्यार बाश

मुझे दरया की गहराई मं तख़्तों में बान्ध रखा हैं फिर कहते हैं कि देखो कुर्ते का दामन भीगने न पाए। जब

हम्माम में सब नंगे हैं तो अब रूकावट कहाँ है, वह तो हश्र का मैदान ही है जहाँ धूप की तेज़ी, ज़मीन की तपिश, हिसाब व किताब की घबराहट, जहन्नम का भयानक दृश्य नफ़्सी, नफ़्सी का आलम किये होगा कोई किसी के नंगेपन की तरफ़ ध्यान भी न देगा वहां तो आदमी अपने भाई से अपनी माँ से, अपने बाप से अपनी बीवी से और अपनी औलाद से भागे गा तो किसी नंगी सुन्दरी को क्या ताकेगा, लेकिन यहाँ तो शरीर भी सुन्दर है, बात भी मनोहर, है, बिजली का पंखा है, शराब व कबाब भक्षण किया हुआ स्वस्थ शरीर हैं तो अब कामनाओं की पूर्ति में रूकावट क्या है, सज़ा किसको मिले जब अव्यस्काएं गर्भ का भार उठाने को तय्यार हैं या निरोध का सहयोग है। आप कहेंगे कि एक संयमी इन चक्करों में नहीं फंस सकता, मेरे पिता जी भी कहा करते थे। कमाल तो जब है जब कांटों पर सोए, इस पर मुझे एक फ़ार्सी लतीफ़ा याद आया, एक नव जवान अफ़ग़ान विद्यार्थी को एक सूफ़ी जी संयमी का अर्थ समझा रहे थे और कह रहे थे कि इसको इस प्रकार समझो कि एक सुन्दर नवयुवक और एक नवयुवती एक शान्दार एयर कन्डीशन कमरे में हों जिस में हर प्रकार की उपलब्धियां हों, दोनों में रिश्ता दोस्ती का हो, उस कमरे में किसी की झांक–ताक का गुज़र न हो फिर भी नव जवान मर्द नवजवान सुन्दर लड़की से दूर रहे तो वह संयमी है। साधारण प्राकृति (सादे मिज़ाज) का अफ़ग़ान बोल पड़ा, "फ़हमीदम, फ़हमीदम, ऑंरा ब ज़बाने मा मुख़न्नस मी गोयन्द" समझ गया, समझ गया, ऐसे को हमारी ज़बान में हिजड़ा कहते हैं। बुद्धि शत्रो योन शिक्षा "काम–इच्छा" को बढ़ाएगी फिर तो परिणाम प्रत्यक्ष है।

याद रहे नाच, नवजवानों के पारसपरिक प्रेम के गाने, समस्त बाजों की धुनें (म्यूज़िकें) स्वच्छ प्रेम को नहीं काम वासना को बढ़ावा देते हैं। वास्तव में गाने और बाजे की धुनें प्रेम को बढ़ावा देते है इस से हमारे कुछ सूफ़ियों ने अपनी बुद्धि से ईश प्रेम बढ़ाने का काम लिया यह इस्लाम की शिक्षा न थी उन सूफ़ियों की अपनी उपज थी निः सन्देह उनमें क़व्वाली से ईश प्रेम में वृद्धि हुई, यह अलग बात है कि इस प्रकार प्राप्त किया ईश प्रेम अभीष्ट है या नहीं परन्तु कोई बताए गाना सुनाने वालियों के गाने से, सुन्दरियों के नाच से, मस्त म्युज़िक से, चाहे वह सभा में हों, सनीमा में हों, टीवी पर हों, इनसे किस चीज़ में वृद्धि होती है? मांसिक शक्ति में? शारीरिक बल में? स्वच्छ प्रेम में? कदापि नहीं, इनसे तो केवल और केवल काम इच्छा में वृद्धि होती है। अतः यदि समाज से व्यभिचार दूर करना चाहते हो, गुदा मैथुन के धिक्कार को समाप्त करना चाहते हो तो नाच गाना तथा मस्त बाजों को समाज से समाप्त करो, मदिरा पान को समाप्त करो और शायद यह अब समाज के बस में नहीं हैं सिवा इसके कि सत्य धर्मियो का राज आए, तो कम से कम योन शिक्षा लाकर बचे खुचे आचारण की तो हत्या न करो। परन्तु कदरें बदल रही हैं। शायद योरोप अमरीका की भान्ति भारत में भी योन क्रीड़ा की स्वतंत्रता मिल जाएगी और इसकी बुराई ही समाप्त हो जाएगी। क्या अच्छा होता कि उस घड़ी के आने से पूर्व मैं इस शरीर को त्याग चुका होता।

हड़ का फ़ाइदा

हलैला ज़र्द (पीली हड़) का छिलका अर्थात गिठली अलग किया हुआ भाग साल भर इस प्रकार खाएं कि चैत और बैसाख में उसका चूरा तीन ग्राम, शहद के साथ, जेठ और असाढ़ में मुनक्का के साथ, सावन और भादों में लाहोरी नमक के साथ, जितना नमक अच्छा लगे। कुंवार और कार्तिक में उसी के बराबर मिस्री के साथ, अगहन और पूस में उसी के बराबर सोंठ के साथ, माघ और फागुन में तीन ग्राम छिलके का चूरा तीन पीपलों के साथ। पीपल पंसारी के यहां मिलती है। इस प्रकार खाने से हर प्रकार के रोगों और क़ब्ज़ से हिफ़ाजत रहती है और जिस्म तन्दुरुस्त रहता है, ऐसा भारतीय तबीबों ने लिखा है। खाने का समय सुबह बे खाये या शाम सोते वक़्त। (इलाजुल ग़ुरबा)

हलैला ज़र्द (पीली हड़) को पानी में घिस कर सलाई से आंख में लगाने से बसारत (आंख की रौशनी) तेज़ होती है, आंख में ठंडक पड़ती है, आंखों की लाली और जलन दूर हो जाती है। आंसू बहने की बीमारी ठीक हो जाती है। (यूनानी दवाएं)

आपके प्रश्नों के उत्तर?

मुफ्ती मोहम्मद तारिक़ नदवी

प्रश्न : हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नाम के वसीले से दुआ मांगना कैसा है?

उत्तर : हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वसीले से दुआ मांगना दुरुस्त है क्यों कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक सह़ाबी को इस तरह दुआ मांगने की तअ़लीम दी है।

प्रश्न : गांव में जुमे की नमाज़ दुरुस्त है या नहीं ?

उत्तर : वह छोटा गांव जिस में ज़रूरियाते ज़िन्दगी का सामान न मिलता हो तो उस छोटे गांव में अह़नाफ़ के नज़दीक जुमे की नमाज़ जाइज़ नहीं ज़ुह्र पढ़ें, लेकिन फ़ुक़हाए किराम फ़रमाते हैं कि अगर कहीं जुमा पहले से क़ाइम है तो उसे ख़त्म न किया जाए।

प्रश्न : क़ब्र में द़फ़्न के वक़्त कोई सामान रह जाए तो क़ब्र खोद कर सामान निकालना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर : क़ब्र में अगर कोई क़ीमती सामान या ज़रूरी काग़ज़ात वग़ैरह रह जाए तो क़ब्र खोद कर उस का निकालना जाइज़ है।

प्रश्न : औरत का कफ़न किस के ज़िम्मे है?

उत्तर : औरत का कफ़न अगर उस का शौहर मौजूद है तो शौहर के ज़िम्मे है जिस तरह उस का नान व नफ़्क़ा शौहर के ज़िम्मे है अलबत्ता अगर शौहर का इन्तिक़ाल पहले ही हो चुका हो या शौहर का तअ़ल्लुक़ शरअ़ी तौर पर ख़त्म हो चुका हो तो दूसरे क़रीबी वली पर उसका कफ़न होगा।

प्रश्न : किसी शख़्स ने नमाज़ में ग़लती से इन्नल अब्रार लफ़ी नअ़ीम" के बजाए "इन्नल् अब्रार लफ़ी जहीम" पढ़ दिया तो नमाज़ होगी या नहीं?

उत्तर : मज़्कूरा (उक्त) ग़लती से नमाज़ न होगी नमाज़ दुहराना पड़ेगी।

प्रश्न : क्या जुमे के ख़तीब (नमाज़ से पहले ख़ुत्बा पढ़ कर नमाज़ पढ़ाने वाला) को तन्ख़्वाह देना दुरुस्त है?

उत्तर : जुमे के ख़तीब की तन्ख़्वाह को उलमा ने जाइज़ क़रार दिया है।

प्रश्न : क्या नमाज़ न पढ़ने वाला काफ़िर है?

उत्तर : हमारे यहां के उ़लमा उस बे नमाज़ी को इस्लाम से ख़ारिज बताते हैं जॉ नमाज़ का इन्कार करते हुए नमाज़ छोड़े। यअ़नी वह कहे मैं नमाज़ नहीं पढ़ूंगा और नमाज़ न पढ़े तो उस को इस्लाम से ख़ारिज बताया है, लेकिन कोई शख़्स नमाज़ का इन्कार नहीं करता, अपनी सुस्ती, काहिली, लापरवाही से नमाज़ छोड़ता है तो उसको इस्लाम से ख़ारिज नहीं बताया बल्कि फ़ासिक़ बताया है, बहुत बड़ा गुनहगार बताया है। इस्लामी हुकूमत हो तो उसे मार की सज़ा देने और जेल में बन्द करने की सज़ा तजवीज़ की है, और जब तक अपने इस गुनाह से तौबा न करे चाहिए कि उसे जेल में बन्द रखें।

प्रश्न : क्या दाढ़ी मुंडाना जाइज़ है? कुछ लोग कहते हैं कि दाढ़ी रखना सुन्नत है, दाढ़ी मुंडाने से सिर्फ सुन्नत छूटेगी।

उत्तर : हां दाढ़ी रखना सुन्नत है लेकिन ऐसी सुन्नत है कि एक सह़ाबी ने भी यह सुन्नत न छोड़ी, पस दाढ़ी रखना तो शिआ़रे इस्लाम है, इस्लाम की पहचान है, दाढ़ी मुंडाना बहुत बड़ा गुनाह है, जो लोग इस गुनाह को सिर्फ़ तर्के सुन्नत कह कर हल्का करने की कोशिश करते हैं वह भी बड़ा गुनाह करते हैं, हदीस है "फमन रग़िब अ़न् सुन्नती फ़लैस मिन्नी" (जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह फेरा वह मेरी जमाअ़त से नहीं।) पस हर मुसलमान को दाढ़ी रखना चाहिए हर जवान को दाढ़ी रखना चाहिए यह तो मर्द होने की निशानी है। दाढ़ी मर्दों ही को तो निकलती है। फ़रमाया नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने : "दाढ़ी बढ़ाओ, मोछें छोटी करो।"

प्रश्न : रसूलों और नबियों की तअ़दाद क्या है?

उत्तर : दुन्या में कितने नबी और कितने रसूल आए, यह बताना मुश्किल है इस लिये कि ख़ुद अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमा दिया कि "कुछ रसूलों के क़िस्से हम ने तुम को बता दिये और कुछ नहीं बताए।" यह भी बता दिया कि हर क़ौम में हादी (पथ प्रदर्शक) भेजे गये हैं। तारीख़ी रिवायतों से पता चलता है कि एक लाख से ज़ियादा नबी और रसूल आए। क़ुर्आने पाक में हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के अ़लावा पचीस नाम और आए हैं।

यौन शिक्षाः

भारतीय संस्कृति पर आघात

एम शैजी

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व में जितने भी बड़े–बड़े इन्किलाब आये, चाहे वह धार्मिक हों या वैचारिक, सांस्कृतिक हों या सभ्यता से संबंधित, तकनीकी हों या औद्योगिक या चाहे किसी भी क्षेत्र में हों, सभी ने शिक्षा के माध्यम से ही मानव समाज को प्रभावित करके सकारात्मक या नकारात्मक अपना प्रभाव कायम किया। वर्तमान युग में प्रचार–प्रसार में इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया की प्रधानता के बावजूद वैचारिक परिवर्तन लाने तथा समाज की सोच बदलने में शिक्षा का महत्व किसी भी प्रकार से कम नहीं हुआ। आज भी सरकारें अथवा सगठन समाज में वैचारिक परिवर्तन लाने के लिए मीडिया के अलावा शिक्षा के क्षेत्र को माध्यम बनाना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानते हैं।

देश में आजकल "यौन शिक्षा" चर्चा का विषय बना हुआ है। विदेशों में पूर्णतया असफल हो चुकी यौन शिक्षा अपने देश में लागू करने के लिए केन्द्रीय सरकार का शिक्षा विभाग एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहा है। जहाँ तक पश्चिमी देशों का सम्बन्ध है सर्वेक्षण की रिपोर्टों के अनुसार ब्रिटेन में यौन आवारगी केवल यौन शिक्षा की वजह से है। यही हालत अन्य पश्चिमी देशों फ्रांस, इटली, ब्राजील, स्विटज़रलैंड आदि देशों की है और सबसे बदतर हालत अमेरीका की है जहाँ यौन आवारगी के कारण लाखों लड़कियाँ बिन ब्याही माँ बन रही हैं, छोटी–छोटी बच्चियों के स्कूल बैगों में निरोध, गर्भ निरोधक वस्तुएं, अश्लील फोटो एलबम रखे हुए मिलते है।

हालत यहाँ तक पहुँच चुकी हैं कि यूरोपीय समाज में यौन क्रिया के सम्बन्ध में "अवैध" शब्द का कोई महत्व ही नहीं रह गया। आपसी रजामंदी से सहवास पश्चिमी समाज में बुरा नहीं समझा जाता। मानव को समस्त स्वतन्त्रता व अधिकार प्राप्त है बस शर्त परस्पर स्वीकृति की है। यही नहीं इससे भी आगे समलैंगिक विवाहों को कानूनी स्वीकृति भी प्रदान की जा चुकी है। लेकिन बड़े दुःख और शर्म की बात यह है कि हमारी केन्द्रीय सरकार का शिक्षा विभाग अपने देश में भी उस पाश्विक संस्कृति को लागू करने के लिए उतावला हो रहा है।

केन्द्रीय सरकार, आगामी शिक्षा सत्र (२००७–०८) में कक्षा ६ से कक्षा १२ तक के छात्र/छात्राओं के लिए पाठ्यकम में यौन शिक्षा को शामिल करने की योजना बना चुकी है। मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों तथा विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं द्वारा यौन शिक्षा का घोर विरोध किया जा रहा है, लेकिन केन्द्र सरकार पश्चिमी देशों की पद्धति व नीतियों को चाहे वे कितनी ही असफल या तबाहकुन हों जबरदस्ती देशवासियों पर थोपने के लिए अपना पूरा जोर लगा रही है। हैरत की बात यह है कि जहाँ पश्चिमी देश अपने यहाँ पाशविक यौन स्वतंत्रता की महामारी से छुटकारा पाने के लिए यौन शिक्षा को समाप्त करने के साथ–साथ अन्य तरीके अपना रहे हैं वहीं हमारी केन्द्रीय सरकार देश में हुए पाश्चात्य संस्कृति के विनाशकारी हमले में बची–खुची नैतिकता और पवित्रता तथा शर्म व हया को पूरी तरह समाप्त करने का ख़तरनाक खेल खेल रही है।

देश में विभिन्न धर्मों तथा विचारों के लोग रहते हैं, जिनकी अलग–अलग आस्थाएं व मान्यताएं विभिन्न सामाजिक संस्कार व रीति–रिवाज हैं। बहुत से समुदाय, वर्ग अपने पवित्र संस्कारों और नैतिक मूल्यों के लिए जाने जाते हैं उन्हीं के कारण विश्व में आज भी भारत को शर्म व हया पर आधारित पवित्र संस्कृति व संस्कारों के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। पति–पत्नी आज भी दिन में एक–दूसरे की तरफ़ अपने बड़ों और परिवार के सदस्यों के सम्मान तथा अपनी प्राकृतिक शर्म की वजह से नज़र उठाते हुए भी लजाते हैं। समस्त शरीर को ढांके कपड़ों के साथ लंबे–लंबे घूंघट, धीमे–धीमे उठते कदम, सरगोशियों में होती बातचीत, धीमा–धीमा स्वर, आहिस्ता से हसना हमारी संस्कृति और देश की सभ्यता की पहचान और गर्व है। आज भी हमारे

समाज में अधिकतर बेटियॉं अपने बाप और बड़ों के हाथ में अपने जीवन की बागडोर सौंपे हुए हैं। माता–पिता तथा परिवार वालों के वैवाहिक फैसलों पर अपनी मौन स्वीकृति सहर्ष प्रदान कर देती हैं। आज भी उनके मस्तिष्क अनैतिक यौन संबंध तो क्या यौन संबंधी चर्चा तक को सामान्य रूप में कबूल करने को तैयार नहीं है।

इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारतीय समाज पर इस अनैतिक यौन शिक्षा को जबरदस्ती थोपने का क्या औचित्य है? क्या हमारे देश में छात्राएं भरी कक्षा में अपने अध्यापक से यौन संबंधों के सुरक्षित उपायों की जानकारी प्राप्त कर सकती हैं? क्या उनकी प्राकृतिक शर्म इस बात की इजाज़त देगी कि वे असुरक्षित यौन क्रियाओं और उनसे होने वाली बीमारियों तथा बचाव के बारे में अपनी जिज्ञासा शांत करें।

पश्चिमी जीवन पद्धति को अपनाने की होड़ में हमारे समाज के नैतिक मूल्यों में गिरावट तो जरूर आयी है लेकिन इस हद तक भी नहीं कि पतन की नौबत आ जाए। हां यदि केन्द्र सरकार ज़बरदस्ती इस पाश्विक शिक्षा को थोपती है तो यह हमारे समाज के नैतिक पतन का आग़ाज़ होगा। इससे समाज का कितना विघटन होगा, कितनी तबाही व आवारगी फैलेगी उसका सहज ही अंदाजा पश्चिमी और यूरोपीय देशों की सभ्यता से लगाया जा सकता है।

हक़ीक़त तो यह है कि भारतीय समाज में किसी भी दृष्टिकोण से यौन शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं है। देश की शायद ६० प्रतिशत से अधिक आबादी विभिन्न प्रचार–प्रसार माध्यमों से जुड़ी हुई हैं।

टी०वी०, रेडियो आदि इलेक्ट्रॉनिक प्रचार माध्यमों से तथा अस्पतालों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, सार्वजनिक स्थानों पर बड़े होर्डिंग्स और दीवारों पर लिखे विज्ञापनों में एड्स और यौन रोगों तथा उनसे बचाव की जानकारियॉं नगरों तथा गांवों में जगह–जगह लिखी हुई नज़र आती हैं।

इनके अलावा स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से भी हर क्षेत्र और स्तर पर सरकारी और गैर सरकारी तौर से उक्त संबंध में जानकारियां निरन्तर रूप से उपलब्ध करायी जा रही हैं, जिनसे शहर और गांवों का बच्चा, जवान, बूढ़ा सभी परिचित हैं। इसके बावजूद केन्द्र सरकार द्वारा यौन शिक्षा को थोपा जाना किसी भी तरह से उचित नहीं है, जबकि वही देश जहां पर इसका "प्रयोग" किया गया, उसके भयंकर दुष्परिणाम के फलस्वरूप तिलांजलि देते नज़र आ रहे हैं।

जबकि केन्द्र सरकार को चाहिए था कि वह यौन रोगों के तथा यौन आवारगी को बढ़ाने वाले स्रोतों को मज़बूती से बन्द करने के लिए व्यापक और प्रभावी कदम उठाती। हर नगर कस्बे में सिनेमा घरों पर क्या अश्लील फिल्में शासन के संरक्षण में खुलेआम नहीं चल रही हैं? जिनके पोस्टर सार्वजनिक स्थानों के अलावा स्कूल/कॉलेजों के आस–पास विशेष रूप से लगाये जाते हैं, जिनमें स्त्री–पुरूषों को नग्न/अर्द्धनग्न अवस्था में दर्शाया जाता है। इन हालात में यदि यौन शिक्षा आरंभ कर दी जाए तो निश्चित रूप से क्लास रूम ही यौन क्रिया का प्रैक्टिकल स्थल बन जाएंगे।

एक बुराई से दूसरी बुराई कभी नहीं मिटायी जा सकती, उसको तो अच्छाई से ही मिटाया जा सकता है। वास्तव में यदि केन्द्र सरकार एड्स, यौन रोगों तथा यौन अपराधों पर काबू पाने के लिए गंभीर है तो उसे यौन शिक्षा के स्थान पर धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को पाठ्य–पुस्तकों में शामिल करना चाहिए। इस सिलसिले में भी इस्लाम की शिक्षाएं बड़ी प्रभावकारी हैं।

समाज में ईश्वर के प्रति विश्वास तथा प्रेम की भावना जागृत हो तथा मानव में उसका भय पैदा हो, परलोक में जवाबदेही की भावना प्रबल होकर निरंकुश जीवन और अनैतिक कृत्यों पर रोक लगे। साथ ही यौन शिक्षा की कमी को दूर करने तथा उसके प्रति राष्ट्रीय कार्यक्रमों के तहत वाद–विवाद प्रतियोगिता, लेखों, गोष्ठियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के माध्यम से समाज में जागृति लाने के लिए अभियान चलाये जाएं। इन कार्यक्रमों में सरकारी, अर्द्धसरकारी मशीनरी के अलावा विभिन्न धर्मों के संगठनों समाजसेवी और स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी और उनका योगदान प्राप्त किया जाए।

"मेरे नज़दीक शेर की एक दिन की जिन्दगी गीदड़ की सौ साल की जिन्दगी से बेहतर है।" (सुलतान टीपू शहीद)

।। वह्य और विज्ञान।।

डार्विन का नज़रीय -ए- इरतिक़ा (विकास दृष्टिकोण)

बिलाल अब्दुल–हयी हसनी नदवी

नया विज्ञान डार्विनी नजरिये को पूरी तफसीलात क साथ स्वीकार करने में असर्मथ है, लेकिन आज का मनुष्य जिस को अपनी बुद्धि पर नाज़ है, वह अब भी उन लकीरों को पीट रहा है। खुदा की दी हुई बुजुर्गी उस को नहीं भा सकी। उस को यही पसन्द है कि जानवर को अपना मूरिसे अअ़ला मूल पुरूष बताए। बन्दर से पीछा छूटे भी तो कीड़े मकोड़े नज़र जाए, अपने ज़ाहिरी इल्म की बिना पर उन्हीं को अपना मूरिस समझ लिया, मसल मशहूर है कि आसमान से गिरा खजूर में अटका।

कोई उन जमीन व आसमान के कुलाबे मिलाने वाले साइन्सदानों से पूछे कि तुम्हारे ज्ञान की सीमाएं क्या हैं? किन्तु उलूम और ज्ञानों को तुम ने अपनी रिसर्च का मेहवर बनाया है? कुरआन का तो साफ एलान है: आखिरत के बारे मं उनका ज्ञान गडमड एवं फेल हो गया है। (नम्ल ६६) यह तो मैदान ही दूसरा है।

नये विज्ञान की कुल पूँजी वह तजरुबात और महसूसात हैं जिन पर वह उपने ज्ञान की बुनयाद रखते हैं। इसलाम ने न सिर्फ यह कि ज्ञान का साथ दिया बलकि उसको नयी दिशाएं दिखायी। इतिहास को पढ़ने वाले यह जानते है कि आज का नया विज्ञान मुसलमानों की वजह से सामने आया। उसकी बुन्यादें मुसलमानों ने ही रखी थीं और इसके साथ साथ मुसलमानों ने इन ज्ञानों की बुन्याद सत्य पर रखी, बेबुनियाद बातों से दूर रहे। दुनिया की दूसरी कौमें इस राज़ को न समझ सकीं, उन्हों ने सिर्फ दिखाई देने वाली चीज़ो को ही सब कुछ समझ लिया, यहाँ तक कि ईसाइयों ने नयी तहक़ीक़ात की रोशनी में अपनी धार्मिक किताबों में भी तबदीली कर डाली। इसका नतीजा यह हुआ कि जब उन तहक़ीक़ात व नज़रियात में तबदीली पैदा हुई तो इन धार्मिक किताबों पर से यक़ीन खतम हो गया, और यहीं से दींन व दुनिया की तफ़रीक शुरू हुई। धर्म को गिर्जा में बंद कर दिया गया।

वह दिन दुन्या के लिए सब से ज्यादा ना मुबारक था जब उसके सामने धर्म के नाम पर ईसाइयत को पेश किया गया। जिस धर्म को ज्ञान से बैर हो वह दुन्या की क़ियादत क्या करता, उस के लिए तो खुद अपना दामन बचाना मुश्किल हो गया। गिरजा ने भलाई इंसी में समझी कि खुद किनारे हो जाएं और दुन्या को अपनी डगर पर चलने दें, अगर अब भी साइंस का किसी धार्मिक बात से टकराव हो जाए तो उस धार्मिक चीज को ठोंक पीट कर सही कर लिया जाता हैं।

जो चीज़ इदराक व एहसास से परे हो, क्या कोई अपनी अक़्ल से उस की खोज कर सकता है? यह तो मैदान ही अलग है। उसके मअ़लूम करने का अगर कोई रास्ता है तो वह सिर्फ अल्लाह की वही है और उसका साधन सिर्फ अल्लाह के संदेष्टा हैं।

रूह की हकीक़त कोई समझ सका? सारे वैज्ञानिकों ने इसकी असलीयत प्राप्त करने से हार मान ली। अल्लाह तआ़ला का साफ़ ऐलान है कि रूह अल्लाह का अम्र है और तुम्हें तो बहुत थोड़ा ज्ञान दिया गया है। (बनी इस्राईल:८५)

इन सीमाओं को अगर आज के ज्ञानी समझ लें तो मुआ़मला ही साफ़ हो जाय। दोनों का मैदान अलग हैं, दीन अल्लाह का दिया हुआ है, उस में सारे हक़ाइक़ बयान कर दिये गये है और ज्ञान के मैदान में आगे बढ़ने की पुकार की गई है और इसके रास्ते भी बता दिए गए है। अल्लाह का एलान है कि हम उन को जल्द ही वह निशानियाँ दिखा देंगे जो संसार में फैली हुई हैं यहाँ तक कि यह बात उनके सामनें खुल जाएगी कि सत्य वही हैं क्या आप के रब की यह बात काफी नहीं कि वह हर चीज़ का शाहिद है?

अल्लाह की निशानियों पर विचार करने से ईमान बढ़ता है, ज्ञान में बढ़ौतरी होती है, लेकिन जो बातें कुरआन व हदीस में बयान हो चुकी हैं वह अटल है, उनमें कोई तबदीली नहीं हो सकती। लाख जतन किए जाएं लेकिन मनुष्य को उसी ओर लौट कर आना है जो आज से साढ़े चौदह सौ वर्ष पूर्व बयान की जा चुकीं हैं।

अल्लाह ने यह दुन्या मनुष्यों क लिए सजाई, फिर आदम व हव्वा को इस संसार में भेजा, फिर संसार को उनकी सन्तान से आबाद कर दिया। अल्लाह का फ़ारमान है:– ऐ लोगों

अपने पालनहार से डरो जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया, पहले उस जान से उसका जोड़ा पैदा किया और फिर उन दोनों से बहुत से नर नारी पैदा कर दिया। (निसा)

जो आसमानी ज्ञान से कोरा है वह मब्दअे इंसानी की तलाश में सरगरदाँ हैं, जाहिरी चीज़ों की मदद से वह यहाँ तक पहुँचा कि इंसान की अस्ल जल कीड़ों की शकल में थी फिर वह खुशकी का कीड़ा बना फिर तरक्की करते करते इस शकल तक पहुँचा।

इस ज्ञान की बुन्याद इस तजरुबे पर हैं कि कोई भी चीज़ एक दम से वुजूद में नहीं आती, अपने अन्तिम स्टेज तक पहुँचने मं उस को काफी समय लगता है। इंसान के बारे में भी उन्हों ने यही तसव्वुर किया लेकिन वह यह भूल गए कि एक ज़ात उन तमाम चीजों से परे है, निज़ामे आलम उसी का कायम किया हुआ है और हर चीज़ उसी निज़ाम से जुड़ी हुई हैं लेकिन वह जो चाहे करे। आदम को उसने बिना माँ की बाप के पैदा, किया, हव्वा को माँ की ज़रूरत न पड़ी और ईसा को बिना बाप के पैदा कर के उस ने बता दिया कि वह खुद इस अपने बनाए हुए निज़ाम का पाबंद नहीं हैं। वह जब किसी चीज़ के करने का इरादा कर लेता है तो कहता है कि हो जा, तो हो जाता हैं।

यह वह ज्ञान है जिस को ग़ैब का ज्ञान कहते हैं उसका साधन सिर्फ वही है जो संदेष्टाओं के वास्ते से प्राप्त होता हैं, अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि असल्ल्म हैं इसलिए अब सत्य ज्ञान का साधन सिर्फ आप सल्लल्लाहु अलैकि उसल्लम हैं। अगर वैज्ञानिक इल्मे नबवी की रोशनी के साथ मैदान में आएं तो सफर आसान हो सकता है और इंसान हज़ार हज़ार ठोकरों से बच सकता हैं।

(अनुवादः मुहम्मद इस्हाक नदवी)

(पृष्ठ २६ का शेष)

अध्यन विषय सामग्री पर कभी उत्तर नहीं लिखना चाहिए।

विभिन्न मिलते जुलते प्रश्नों को हल करने के बाद सख्ती से सेल्फ वैलूएशन (अपनी जांच)करते रहना चाहिए।

(७) निगेटिव मार्किंग को भी तैयारी करते समय शामिल रखना चाहिए क्योंकि इन से प्रश्नों के हल पर लगने वाले समय और अपने खुद की जांच में मदद मिलती है और प्रश्नो की संख्या और उन पर लगने वाले समय को इस प्रकार बांट लेना चाहिए कि समय के भीतर प्रश्न पत्र हल हो सके।

(८) आबजेक्टिव प्रश्नों के उत्तर को लिखित अभ्यास पर ही यकीन रखना चाहिए औ अन्दाजों और सम्भावित उत्तरों से बचना चाहिए।

(९) पीएमटी की सारी तैयारी लिखित अभ्यासों और प्रश्नों के लिखित उत्तर पर आधारित होना चाहिए। तैयारी में कोई अंश छूटना नहीं चाहिए। परीक्षा से पहले आखिरी और आवश्यक तैयारी अध्ययन की हुई सूची और नोट्स पर निर्भर होना चाहिए और परीक्षा में पूरे यकीन और आत्मविश्वास के साथ बैठना चाहिए।

पीएमटी जितना कठिन मालूम होता है वास्तव में उतना ही आसान और दिलचस्प होता है शर्त यह है कि ऊपर लिखी हुई बातों पर पूरा पूरा अमल किया जाए।

जाग हे भारतवासी जाग

हसनैन कैफ नवगांवी
(भंडारा)

हिंसा की घनघोर घटा है
मानवता का खून हुआ है
दिल का सुख और चैन लुटा है
डसते हैं नफरत के नाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

उधर हैं कुछ सरमायादार
इधर करोड़ों हैं नादार
भूखों, नंगों की यलगार
आंखें शोले, मुंह में झाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

इन्सानों को मार रहे हैं
शासन को ललकार रहे हैं
भारत में फुंकार रहे हैं
नक्सलवादी काले नाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

जात–पात के झगड़े कब तक
आतंकवादी हमले कब तक
धर्म के नाम पे दंगे कब तक
देश के कैसे फूटे भाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

एक खुदा के सब बंदे हैं
एक आदम के सब बेटे हैं
फिर आपस में क्यों लड़ते हैं
"कैफ" प्रेम का छेड़ो राग
चारों ओर लगी हैं आग
जाग हे भारतवासी जाग।

क़िस्सा इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का

अबू मर्गूब

नोट : हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा क़ुर्आन मजीद में बहुत सी जगहों पर आया है। हर जगह अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की मसलहत से जो वाकिआ़ मुनासिब जाना ज़िक्र किया। इन वाक़िआ़त की तर्तीब क़ाइम करना मुश्किल काम है लिहाज़ा हम अहम अहम वाक़िआ़त अलग अलग ही बयान करेंगे। यहां सूर–ए–अनआ़म का अहम वाकिआ़ पेश है।

अल्लाह तआ़ला अपने आख़िरी और महबूब नबी को मुख़ातब कर के फ़रमाते हैं :–

और वह वक़्त भी काबिले ज़िक्र है। जब इब्राहीम (अ०) ने अपने वालिद आज़र से कहा : क्या आप बुतों को अपने मअ़बूद (पूज्य) ठहराते हैं? मैं तो आप को और आप की क़ौम को खुली गुमराही (पथ भ्रष्टा) में देखता हूं। इसी तरह मैंने इब्राहीम (अ०) को आसमानों और जमीन के अ़जायबात (आश्चर्य जनक बातें) दिखायीं ताकि वह कामिल यक़ीन करने वालों में से हो जाए। पस जब उन पर रात छा गई तो उन्होंने एक ख़ूब चमकदार तारा देखा जिसे उनकी क़ौम पूजती थी, उसे देख कर कहा तुम्हारे गुमान में यह मेरा रब है? जरा इस पर ध्यान तो दो फिर जब वह डूब गया तो फ़रमाया अब समझ में आया? और एअ़लान किया कि मैं पसन्द नहीं करता कि डूब जाने वाले को अपना रब समझने लगूं चाहिए कि तुम लोग तारे को अपना रब मत समझो फिर जब इब्राहीम (अ०) ने तारे से ज़ियादा चमकवाले चांद को देखा जिसे उनकी क़ौम पूजती थी, फ़रमाया तुम्हारे ख़याल में यह चान्द मेरा रब है? ज़रा इस पर भी ध्यान दो, जब वह डूब गया तो आपने फ़रमाया : मेरे रब ने मुझे हिदायत दे रखी है अगर उस की जानिब से मेरे लिये हिदायत का फैसला न होता तो मैं भी भटके हुए लोगों में हो जाता, यह डूब जाने वाला चान्द किसी का रब नहीं हो सकता। फिर जब सब से ज़ियादा चमकते हुए सूरज को देखा, उसे भी उनकी क़ौम पूजती थी। फ़रमाया तुम लोगों के गुमान में यह सब से बड़ा है यह मेरा रब है? तो ज़रा इस पर भी ध्यान दो जब वह भी आंखों से ओझल हुआ तो आप ने अपनी क़ौम को मुख़ातब कर के कहा : ऐ मेरी क़ौम यह जो तुम लोग तारा, चान्द और सूरज वग़ैरह को पूज कर शिर्क कर रहे हो तो मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूं, तुम्हारे शिर्क से मेरा कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। मैंने इन सब से मुंह मोड़ कर यकसू (शांत चित) होकर अपना रूख़ उसी ख़ालिक़ की ओर कर लिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को बनाया और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। जब उन की क़ौम उन से इस मुआ़मले में उन से उल्टी सीधी बहस करने लगी तो आप ने फ़रमाया तुम अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ रहे हो। जब कि उस ने मुझे सीधी राह दिखा दी है और अपनी मअ़रिफ़त (पहचान) दे दी है। तुम लोग मुझे अपने झूठे बेबस मअ़बूदों से डराते हो मैं तुम्हारे इन बेबस मअ़बूदों से बिल्कुल नहीं डरता, यह मुझे कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते सिवा इस के कि जिसे मेरा रब चाहे, तुम यह न समझो कि शिर्क कर के बच जाओगे, मेरे रब के इल्म से कोई चीज़ बाहर नहीं है। क्या तुम लोग ध्यान नहीं देते? फिर जिन को तुम लोगों ने अल्लाह का शरीक ठहरा रखा है मैं उनसे कैसे डर सकता हूं जब कि तुम इस से नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह का शरीक ठहरा रखा है जब कि इस पर अल्लाह तआ़ला ने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी। अब ध्यान दो कि इन दोनों फ़रीक़ों में से अम्न व सुकून का कौन ज़ियादा हक़दार है अगर तुम कुछ जानते हो तो जवाब दो। सुन लो! जो लोग ईमान लाये और शिर्क से बचे रहे वही लोग अम्न वाले हैं और वही हिदायत याफ़्ता हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है यह वह दलील थी जो हम ने इब्राहीम (अ०) को उन की क़ौम के मुक़ाबले में बताई थी, हम जिसे चाहते हैं उस के मर्तबे बुलन्द करते हैं। ऐ मुहम्मद (स०) आप का रब हकीम (ज्ञानी) है, अ़लीम (बहुत जानने वाला) है।

ग्राहकों से अनुरोध है कि वह अपना चन्दा वक़्त पर भेजें ताकि इन्तिज़ाम में दुशवारी न हो।

— प्रबन्धक

पी.एम.टी. की तैयारी का आसान तरीका

डॉ० एम० नसीम आजमी

डाक्टरी का पेशा हमेशा से सम्मानजनक और लाभदायक भी रहा है। और वर्तमान युग में जब आबादी तेजी से बढ़ने लगी है नई – नई बीमारियों ने भी अपने पैर फैलाने शुरू कर दिये हैं और आज बहुत सी ऐसी नई बीमारियां आम हो गई हैं जिन के नामों से भी अभी कुछ दशक तक लोगों को जानकारी नहीं थी। ऐसे में डाक्टरों का महत्व और उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। वैसे भी मेडिकल शिक्षा में जहां स्वरोजगार की अच्छी सम्भावनाएं हैं वहीं अच्छे वेतन वाली सरकारी और गैर सरकारी नौकरी के भी अच्छे अवसर हैं।

पीएमटी या प्री–मेडिकल टेस्ट में शरीक होने के लिए उम्मीदवार को १०+२ अर्थात इण्टर मीडिएट जीव विज्ञान से पास होना जरूरी है। वह छात्र भी टेस्ट में बैठ सकते हैं जिन्होंने इण्टर जीव विज्ञान की परीक्षा दी है।

डाक्टर बनने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि वह अपना पूरा ध्यान उद्देश्य की प्राप्ति की तरफ केन्द्रित करें और तैयारी का सांइटिफिक तरीका अपनाएं और तैयारी की योजना बना कर पाठ्यक्रम के तमाम भागों पर ध्यान दें। किसी भी भाग को या अंश को किसी भी दशा में अधूरा न छोड़ा जाए और किसी भी हालत में परेशानी, घबराहट या उकताहट से सूरतहाल (परिस्थिति) को बेकाबू न होने दिया जाए और अपने पूरे समय व क्षमता को नष्ट होने से बचाया जाए और निश्चित समय के अन्दर ही पाठ्यक्रम को पूरा कर लिया जाए ताकि नतीजा आश्चर्य जनक तौर पर संतोष जनक हो। और ऐसा उसी समय संभव है जब पीरीट्यू सिद्धान्त २०:८०के फारमूले का प्रयोग किया जाए अर्थात २० प्रतिशत सही कोशिश से ८० प्रतिशत नतीजा निकलेगा। जब कि ८० प्रतिशत अकेन्द्रित कोशिश से २० प्रतिशत ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। और अकेन्द्रित कोशिश से बचने के लिए एक वर्क शेड्यूल तय करना होगा और इस के लिए निम्न लिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना होगा :–

(क) आसानी से समझ में आनेवाला एक विषय (**Physics, Chemistry, Biology**) में से किसी एक को चुन करके उसका ध्यान पूर्वक अध्ययन बराबर करते रहें।

(ख) आसान मालूम होने वाले शीर्षकों पर निशान लगा कर उनका पूरी गहराई से अध्ययन बराबर करते रहना चाहिए।

(ग) आसान विषय की तैयारी पूरी करने के बाद बाकी दो विषय में से जो कम कठिन हो उसके आसान टापिक्स की सूची बना कर पहले उनका अध्ययन करें और उसे बराबर दुहराएं इस तरह बाकी कठिन टापिक्स खुद बखुद धीरे–धीरे आसान होते जाएंगे। इसी प्रकार उन का अध्ययन करें और बराबर दुहराते रहें।

उपरोक्त बिन्दुओं के अनुसार साइंटिफिक और योजनाबद्ध ढंग से अध्ययन और दोहराने और अभ्यास व प्रश्नों को लिखित रूप से बराबर हल करते रहने से कठिन विषय भी आसान हो जाएगा और आसान से कठिन की तरफ कदम बढ़ाकर पीएमटी की तैयारी को आसान और दिलचस्प बनाया जा सकता है।

तैयारी की शुरूआत : किसी भी काम को सही तरीके की शुरूआत से साधारणतः सही नतीजा ही निकलता है। अतः प्रिमेडिकल टेस्ट की शुरूआत भी योजना बनाकर सही ढंग से करना चाहिए ताकि काम की अधिकता के कारण मन परेशान या विचलित न हो और हिम्मत हार जाने का खतरा पैदा न हो। पीएमटी की तैयारी के लिए जेहनी तौर पर तैयार हो जाने के बाद सबसे पहला काम यह करना चाहिए कि सारे पाठ्यक्रम को छोटे–छोटे भागों में बांट कर आसान से कठिन की तरफ बढ़ना चाहिए और क्रमशः लक्ष्य की तरफ बढ़ने की कोशिश करना चाहिए। इस प्रकार पीएमटी की बेहतर शुरूआत करनी चाहिए।

हिन्दुस्तान के मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यार्थी आमतौर पर साइंस की शिक्षा हासिल नहीं करते और अगर कुछ करते भी हैं तो वह मेडिकल की शिक्षा को कुछ ऐसा हौवा समझते हैं जो उनके बस से बाहर है जबकि मेडिकल की तालीम तमाम तालीम से आसान, दिलचस्प और लाभदायक है शर्त केवल लगन, मेहनत और हौसले की होती है।

तैयारी के कुछ महत्वपूर्ण तरीके:

पी०एम०टी० की बेहतर तैयारी के लिए पाठ्यक्रम की बेहतर तरतीब, लिखित अभ्यास, साइंटिफिक अन्दाज, समय और योग्यता का सकारात्मक प्रयोग और इन में आपसी सम्बन्ध और लगातार बारबार दुहराते रहना और लिखित अभ्यास जारी रखना ही सफलता की कुंजी है। इस के लिए निम्नलिखित तरीका इख्तियार करना होगा।

(१) दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें दर्जे के साइंस के विषयों को दुहराना होगा। जो छात्रा इंटर में पढ़ रहे हैं उन्हें छुट्टियों में दुहराने क काम लगन के साथ करना होगा। हर साल सितम्बर महीने से सारी छुट्टियां होती हैं। अतः इन छुट्टियों को पीएमटी की तैयारी में इस्तेमाल करना होगा।

(२) हाईस्कूल और इण्टर के साइंस विषयों से पीएमटी, सीपीएमटी आदि परीक्षाओं में पूछेगये प्रश्नों और टापिकों की सूची बनाकर उन टापिकों और सवालों के संक्षिप्त नोट बनाना होगा जो अहम और कारआमद हों यह कार्य तीनों विषयों (**Physics, Chemistry, Biology**) में करना होगा।

यहां यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पी०एम०टी० में अधिकतर प्रश्न सी०बी०एस०ई० के पाठ्यक्रम पर आधारित होते हैं। इस लिए वह विद्यार्थी जो यूपी बोर्ड से परीक्षा देते हैं उन्हें सीबीएसई के पाठ्यक्रम का भी अध्ययन करना चाहिए।

(४) दोहराते रहना : प्रश्नों के उत्तर लिख कर अभ्यास जारी रखना, हफते में एक दिन संभावित प्रश्नों का उत्तर लिख कर प्रेक्टिस करना सफलता की जमानत है। फिजिक्स, केमिस्ट्री और बॉयोलाजी के लिए रोजाना कालेज और कोचिंग के अतिरिक्त कम से कम एक एक घंटा पढ़ना जरूरी है। मुशिकल से याद होने वाले टापिक जैसे ऑर्गनिक और केमिस्ट्री कम्बीनेशन का एक चार्ट बना कर अपने पढ़ने की जगह लगा लेना चाहिए ताकि उस पर बराबर निगाह पड़ती रहे और वह याद हो जाए। अगर सम्भव हो तो अच्छे कोचिंग सेन्टर को ज्वाइन कर के अधिक अच्छी तैयारी की जा सकती है।

ध्यान देने की प्रमुख बातें :

पीएमटी की तैयारी करते समय कुछ अहम बातों पर ध्यान रखना चाहिए और जानकारी को याद रखने के लिए नोट्स की तैयारी को सिस्टमेटिक रखना, विभिन्न पुस्तकों से प्राप्त की हुई जानकारी इकट्ठा करके संक्षिप्त और केवल आवश्यक विषय सामग्री पर नोट्स बनाना। भारी भरकम नोट्स और अनावश्यक जानकारी से बचना, और बिल्कुल टू दी प्वाइंट नोट्स बनाना। निम्नलिखित बातों पर ध्यान जरूर रखना चाहिए ताकि समय का अधिक से अधिक और सही इस्तेमाल हो सके :–

(१) पिछले चार पांच वर्षों के प्रश्न पत्रों को इकट्ठा करके हर एक विषय व टापिक्स से जरूरी जानकारी का चुनना और परीक्षा में पूछे जाने वाले सम्भवित प्रश्नों के हल पर ध्यान देना और यह भी याद रखना कि केमिस्ट्री से मिली जुली धातुओं से सम्बन्धित प्रश्नों और बायोलाजी से आम तौर पर बीमारियों से सम्बन्ध रखने वले प्रश्न ही पूछे जाते हैं।

(२) टापिकों को छांट कर और उनकी सूची बनाकरा और हर विषय के लिए एक रजिस्टर बनाकर उन में अहम और जरूरी प्रश्नों और टापिकों पर ध्यान रखने के लिए उसे हमेशा अपने पास रखना।

(३) काम आने वाली जानकारी चाहे वह किसी विषय और पुस्तक से प्राप्त हो उस विषय के रजिस्टर में दर्ज करना जैसे केमिस्ट्री के अध्ययन से अगर गन मेटल कम्पोजीशन के बारे में जानकारी मिल जाए तो उसे केमिस्ट्री रजिस्टर में मिली जुली धातों को शीर्षक के साथ नोट कर लेना चाहिए। इस प्रकार जो उपयोगी सूची तैयार होगी वह फाइनल तैयारी में बहुत ही लाभकारी साबित होगी।

(४) केमिस्ट्री में ४० से ५० ऐसी धातुऐं हैं जो मेडिकल के लाभकारी साबित होती हैं और पीएमटी में मिश्रित (मिलीजुली) धातुओं पर आधारित प्रश्न जरूरी पूछे जाते हैं। अतः इन मिश्रित धातुओं के कम्पोजीशन को याद रखना यद्यपि कठिन काम है फिर भी इन की सूची बनाकर आसान बनाया जा सकता है। अतः इस पर खास ध्यान देना चाहिए।

(५) फिजिकस के विषय में फारमूलों, आविष्कार (ईजाद) और रिसर्च की खास अहमियत हासिल होती है। अतः इन की सूची बनाने का खास ध्यान रखना चाहिए। ठीक उसी तरह बॉयोलाजी में वैज्ञानिकों, लक्षणों और जीन आदि को महत्व प्राप्त है।

(६) तैयारी करते समय उत्तर के लिए सादा कागज या कापी का प्रयोग करना चाहिए और किताब या

(शेष पृष्ठ २३ पर)

प्रातः काल का टहलना [redacted] स्वास्थ के लिए लाभदायक

मु० अजमल खां
अनुवाद : अब्दुर्रहीम सिद्दीकी

स्वास्थ्य जीवन बिताने के लिए प्रातः काल का टहलना अत्यन्त लाभप्रद व्यायाम है। प्रातः काल की ऋतु बड़ी सुहानी तथा रूचिकर होती है। अतः उस समय टहलने, भ्रमण तथा क्रीड़ा करने से जहां स्वास्थ्य अच्छा रहता है वहीं बहुत से रोगों से शरीर सुरक्षित भी रहता है। नित्य हरे भरे तथा खुले स्थान पर टहलने वाले लोग स्वच्छ तथा शुद्ध वायु पाते हैं जो स्वास्थ जीवन के लिए अति आवश्यक है। हृदय रोगियों को विशेषकर प्रातः समय में टहलना चाहिए उस से उन्हें आनन्द तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। प्रातः के समय जल, वायु, धरती सब स्वच्छ, शुद्ध तथा प्रफुल्ल होते हैं, जो शरीर पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं। एक अनुसंधान के अनुसार प्रभात के समय टहलना आंख के रोगों के लिए बहुत ही लाभदायक है। प्रतिबन्ध के साथ नित्य प्रातः में केवल १५ मिनट ही टहलने से नेत्रज्योति में निरन्तर बृद्धि होती है तथा आयु ढलने पर भी नेत्र ज्योति में कमी नहीं आती। शूगर के रोगियों के लिए भी प्रातः की सैर बहुत ही हितकारी है, इस से उन के भार तथा शूगर लेविल में कमी आती है।

गर्मियों की ऋतु में प्रातः समय का टहलना जितना प्रभावकारी है सर्दियों की ऋतु में भी उतना ही लाभदायक है। परन्तु अधिकांश लोग ठण्डक लग जाने के भय से सर्दियों के प्रातः काल में भ्रमण करने से बचते हैं। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए अपितु वर्ष की हर ऋतु में नियमानुसार इसे अपनाए रहना चाहिए। टहलने के समय वाद विवाद से बचना चाहिए, टहलते समय लम्बे तथा गहरे श्वास लेने चाहिए, नंगे पांव टहलना अधिक लाभदायक है। इससे मस्तिष्क दृढ़ होता है तथा रक्त संचालन में वृद्धि होती है। प्रातः की टहल दिन चर्या बना लेने से स्मरण शक्ति दृढ़ होती है तथा स्वास्थ्य पग चुम्बन करती है। प्रातः का टहलना जहां लाभदायक व्यायाम है वहीं वह लाभप्रद निःशुल्क औषधि भी है। जो बहुत से रोगों से छुटकारा देती है जिसे अपनाकर जीवन को स्वास्थ्य तथा रोग रहित बनाया जा सकता है।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के शुक्रिये के साथ)

तीसरी किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू जफर नदवी

गजनवी खानदान : बगदाद के अब्बासी खलीफाओं की कमजोरी के कारण प्रान्तों के हाकिम आमतौर पर स्वतंत्र हो गए। उनमें बुखारा का हाकिम इस्माईल समानी भी था। उसके मरजाने के बाद उस का एक तुर्क अमीर अल्पतगीन नाराज होकर गज़ना पहुंच, जहां उसने एक स्वतंत्र राज्य की नीव डाली। उसका दामाद सुब्तगीन एक तुर्क था, जो उस के मरने के बाद गजना का हाकिम बना। काबुल और पेशावर पर कब्जा करके हुकूमत करने लगा। लाहौर के राजा जयपाल से अक्सर सरहद के बारे में झगड़ा रहता। यहां तक कि एक बार लड़ाई की नौबत पहुंची जिसमें जयपाल की पराजय हुई और राजस्वकर (खिराज) आदा करने पर सुलह हो गई। राजा जयपाल के मरने पर उस के उत्तराधिकारी आनन्द पाल ने राजस्व कर देने से इनकार कर दिया। उधर गज़ना के तख्त पर बाप की जगह महमूद बैठा। जब उस को मालूम हुआ कि आनन्दपाल लड़ाई की तैयारी कर रहा है तो वह लाहौर की तरफ फौज लेकर बढ़ा। आनन्द पाल ने भी कन्नौज, मेरठ, मथुरा कालेंजर, मालवा, अजमेर, गुजरात और ग्वालियर के राजाओं को अपनी मदद के लिए बुलाया। महमूद ने पेशावर के निकट सबकी फौजों को पराजित किया और परिहार (मालेगनीमत) लेकर वापस चला गया।

लेकिन स्वाभाविक तौर पर उस को यह बात बुरी लगी क इन राजाओं ने आनन्दपाल के साथ शरीक होकर बिला जरूरत उस को लड़ाई की दावत दी। इस लिए महमूद ने भी एक एक करके सब से बदला लिया। सबसे पहले लाहौर को अपने राज्य में शामिल करके अयाज को वहां का हाकिम नियुक्त किया। इस तरह सिन्ध पर भी कब्जा करके एक हाकिम के आधीन कर दिया। बाकी देश जैसे कशमीर, कन्नौज, कालेंजर, बालानाथ पर्वत, ग्वालियर, गुजरात आदि भी धीरे–धीरे साल बसाल उस के अधीन होते गए। महमूद बड़ा बहादुर, सेनापति, प्रबन्धक और दानी बादशाह था। यह पहला बादशाह है जिसने भारत के उत्तर में मुस्लिम शासन की नीव रखी और हिन्दी भाषा में अपना सिक्का जारी किया। उस के अचानक हमलों से हिन्दुस्तान कांप जाता था। १०२५ ई० (४१६ हि०) उसका मशहूर हमला सोमनाथ (गुजरात) पर हुआ। मुलतान से बीकानेर होते हुए ३५० मील का निर्जन रेगिस्तानी मैदान पार करके अजमेर और आबू होकर गुजरात पहुंचा और फिर सोमनाथ, पटन फतह करके छोटे रन के रास्ते से रेगिस्तान को पार करते हुए मुलतान पहुंच गया। तात्पर्य यह कि सिकन्दर की तरह महमूद भी अपने समय का बड़ा विजेता था। उसने कभी पराजय का मुंह नहीं देखा। उसकी सेना में हिन्दू बड़े–बड़े पदों पर आसीन थे। उसकी सारी उम्र में एक घटना भी हिन्दू को बलपूर्वक मुसलमान बनाने की और शान्ति की दशा में किसी मन्दिर को तोड़ने की नहीं मिलती। ग्वालियर और कालेंजर उस की अधीन रियासतें थीं जहां राजनीतिक अपराधी ग़ज़ाना से भेजे जाते थे। १०३० ई० (४२१ हि०) में ग़ज़ना में महमूद का देहान्त हुआ।

महमूद के बाद उसका बड़ा लड़का मुहम्मद तख्त पर बैठा, मगर दूसरे भाइयों से उसकी नहीं बनी। पहले चन्द सरदार उस से बागी हो गये, उसके भाई मसऊद की तरफ रवाना हुए जिन की गिरफतारी के लिए सुबन्द राय एक हिन्दू सेनापति को फौज देकर भेजा गया जो असफल रहा। फिर मसऊद के आने की खबर सुनकर खुद एक बड़ी फौज के साथ मुकाबला को निकला। जब फौजें आम ने सामने हुईं तो सरदारों ने मुहम्मद को गिरफतार करके कैद कर दिया और सब के सब सुलतान मसऊद से मिल गये।

सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी :–

सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी बड़ा दानी और बहादुर था। उस को तीर अन्दाजी में बड़ी दक्षता (मलका) थी। उस का गुर्ज (गदा) कोई मुश्किल से उठा सकता था। उसने अहमद बिन हसन मैमन्दी को जो सुल्तान के मालगुजार राजा कालेंजर के किले में कैद था बुलाकर वजीर बनाया। १०३० ई० (४२१ हि०) में किला सरस्वती (जो कश्मीर के पास था) को फतह किया। १०३४ इ० (४२६ हि०) में हिन्दुस्तान के अधिकारी अहमद ने बगावत की। उस को दमन के लिए हिन्दू सेनापति नाथ

को भेजा गया जो असफल रहा। फिर सेना अध्यक्ष तिलक आया जिसने बड़ी बहादुरी से बगावत का दमन किया। १०३५ ई० (४२७ हि०) में किला बांसी और सेनापत फतह किया। वापस जाते हुए लाहौर में अपने लड़के को यहां का हाकिम और अयाज को उसका शिक्षक बनाया। फिर जब मुलतान में बगावत हुई तो उस को मुलतान में शान्ति स्थापित करने के लिए रवाना किया जिसने बागियों का दमन करके शान्ति स्थापित की। जब १०३८ ई० (४३० हि०) में सलजूकी तुर्कों से पराजित हुआ तो घबराकर हिन्द में राजधानी बनाने का इरादा किया लेकिन उस के सरदार उसकी इस राय से सहमत न थे। इस लिए रास्ते ही में उस को कैद कर दिया और सुल्तान मुहम्मद को कैद से निकाल कर बादशाह बनाया। मुहम्मद ने अपने लड़के को लाहौर और मुलतान का हाकिम बना कर भेजा। सुल्तान मसऊद कुछ दिनों एक किले में कैद रहा फिर वह १०४१ ई० (४४३ हि०) में कत्ल कर दिया गया।

सुल्तान मौदूद बिन मसऊद गजनवी : शाहजाद मौदूद को जब बाप के कत्ल की सूचना मिली तो पहले गजना पहुंचा। जब दरबार के सरदार उस से सहमत हो गए तो एक फौज के साथ सुल्तान मुहम्मद का मुकाबला किया जिस में सफल रहा। गजना का तख्त हासिल करने के बाद अबूनसर मुहम्मद बिन अहमद को लाहौर का हाकिम बनाया। सुल्तान लाहौर से मुलतान आया और सिन्ध से लेकर बांसी और थानेस्वर तक का बेहतरीन इंतजाम करके ग़ज़ना वापस गया। १०४३ ई०(४३५ हि०) में सलजूकीयों के साथ सुलतान को जंग में व्यस्थ देखकर देहली के राजा ने बांसी और थानेस्वर पर कब्जा कर लिया और फिर नगर कोट का किला चार महीने के घेराव के बाद फतह हो गया। १०४८ई० (४४० हि०) में सुल्तान ने अपने लड़के अबुल कासिम महमूद के कोतवाल अबू अली को भारत का सेना अध्यक्ष बना कर उनके साथ कर दिया, जो पेशावर, कश्मीर और मुलतान की बगावत दूर करके गजना वापस गया। १०४६ ई० (रजब ४४१ हि०) में पेट दर्द की बीमारी से सुल्तान मौदूद का देहान्त हो गया।

अली बिन मसऊद गजनवी : सुलतान मौदूद के मरने पर अली बिन रबीअ ने उसके तीन साल के बच्चे को तख्त पर बैठाया। मगर ग़ज़ना की सल्तनत के सदस्य इस पर राजी न हुए। इस लिए उसको तख्त से उतार कर सुल्तान अली बिन मसऊद को बादशाह बनाया। अली बिन रबीअ डर कर एक दल के साथ हिन्दुस्तान आया और पेशावर से सिन्ध का इलाका अपने कब्जे में कर लिया। अब्दुल रज्जाक बिन अहमद मैमन्दी जिस को सुल्तान मौमूद ने सीस्तान का हाकिम बनाकर भेजा था, सुल्तान के देहान्त की सूचना पाकर बगावत पर आमादा हो गया। अब्दुर्रशीद बिन महमूद गजनवी को जो बस्त के किले में कैद था, सरदार बनाकर ग़ज़ना जा पहुंचा। अली बिन मसऊद असफल रहा।

सुल्तान अब्दुर्रशीद बिन महमूद गजनवी :

१०५१ ई० (४४३ हि०) में सुल्तान अब्दुर्रशीद तख्त का मालिक हुआ। उसने अली बिन रबीअ को जो हिन्दुस्तान और सिन्ध पर काबिज़ हो गया था, विभिन्न तर्कीबों से ग़ज़ना वापस बुलाया और उसकी जगह नौशतगीन करखी को हिन्दुस्तान और सिन्ध का हाकिम बना कर और भारी फौज देकर रवाना किया। उस ने हिन्दुस्तान पहुंच कर नगरकोट के किले को चन्द रोज की घेराबन्दी के बाद फतह कर लिया। सीस्तान के हाकिम तुगरल ने बगावत करके ग़ज़ना पर कब्जा कर लिया और महमूद के खानदान के अक्सर उत्तराधिकारियों (वारिसों) को मौत के घाट उतार दिया और खुद सुल्तान बन कर तख्त पर बैठा। नौशतगीन लाहौर के हाकिम को जब यह मालूम हुआ तो गजना के सरदारों को लज्जा दिलाई चुनानचि लोगों ने तुगरल को कत्ल कर दिया।

फर्रूखजाद बिन मसऊद गजनवी : गजना के सरदारों की सर्वसम्मत से बादशाह हुआ और नौशतगीन उसका मंत्री बना लेकिन इस बादशाह का सारा समय सलजूकीयों से मुकाबले में व्यतीत हो गया और चूंकि उसने दो बार सलजूकीयों को पराजित किया था, इसलिए आम प्रजा पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। १०५८ ई० (४५० हि०) में कूलंज (पेट दर्द) की बीमारी में उसका देहान्त हो गया।

सुल्तान इब्राहीम बिन मसऊदगजनवी :

वह गजना के तख्त पर जब बैठा तो सलजूकीयों की तरफ से उसको बड़ा डर था। लेकिन सुलह के बाद इतमीनान से उसने हिन्दुस्तान के प्रान्त फतह करने शुरू किये। और अनगिनत मालेगनीमत (परिहार) प्राप्त करके ग़ज़ना वापस गया। बादशाह बहुत ही नेक और बहादुर था। सुलेख में महारत रखता था। हर साल अपने हाथ से कुर्आन पाक लिखकर मदीना मुनौवरह और दूसरा मक्कामुअज्जमा भेजा करता था। लगभग चालीस वर्ष उस ने हुकूमत की १०६८ ई० (४६२ हि०) में उस का

देहान्त हो गया।

सुल्तान मसऊद बिन इब्राहीम:

बाप के बाद वह तख्त पर बैठा उस के जमाने में तग़ातगीन लाहौर का हाकिम बनाया गया, जिस ने गंगा पार होकर विभिन्न प्रान्तों को फतह किया और लूट का माल लेकर लाहौर वापस आया। सुल्तान न केवल धनी बल्कि अपनी नेकियों के लिए बहुत मशहूर था। १६ वर्ष हुकूमत कर के १११४ ई० (५०८हि०) में मर गया। उस के बाद उस का लड़का अरसलान शाह गजना का बादशाह हुआ। सुल्तान सलजूकी ने जब गजना को ले लिया तो यह हिन्दुस्तान चला आया और संजर के चले जाने के बाद हिन्दी फौज लेकर गजना पर चढ़ाई की लेकिन संजर के वापस आने पर फिर पहाड़ों में जानिकला। लोग उसको बन्दी बनाकर गजना लाये जहां वह कत्ल कर दिया गया। उस ने केवल तीन वर्ष हुकूमत की। उस के समय में हिन्दुस्तान का हाकिम मुहम्मद बाबलीम था।

बहराम शाह बिन मसऊद :

बहराम शाह जो सुल्तान इब्राहीम का पोता था १११७ ई० (५११ हि०) में अपने मामू सुल्ताल संजर सलजूकी की मदद से गजना के तरख्त पर बैठा।

मुहम्मद बाबलीन जो हिन्दुस्तान का हाकिम था, बागी हो गया। बहरामशाह ने खुद हिन्दुस्तान आकर ११२० ई० (५१४ हि०) में उस को गिरिफ्तार करके कैद कर दिया।

कुछ दिनों के बाद क्षमा करके फिर हिन्दुस्तान का हाकिम बना दिया। उस ने सिवालिक पर्वत के पास नागर नामी किला को फतह किया और अपने बाल बच्चों और माल व दौलत को इस सुरक्षित स्थान में रख कर एक भारी सेना तैयार की। हिन्दू राजाओं को पराजित करता रहा जिस से घमण्डी होकर उसने फिर बगावत की। सुल्तान बहराम शाम फिर हिन्दुस्तान आया और मुलतान के स्थान पर दोनों की फौजों में भारी लड़ाई हुई जिसमें बहराम शाह ने विजय प्राप्त की और बागी मारे गये। बहराम हुसैन बिन इब्राहीम अलवी को हिन्दुस्तान का हाकिम बना कर ग़ज़ना की तरफ वापस गया। जब सैफुद्दीन गौरी ने गजना पर हमला किया तो बहराम शाह मुकाबला की ताकत न देख कर हिन्दुस्तान चला आया। जाड़े के जमाने में फिर गजना पर कब्जा कर लिया लेकिन अलाउद्दीन गौरी ने ऐसा पराजित किया कि हिन्दुस्तान वापस आकर इसी रंज और क्रोध के कारण ११५२ ई० (५४७ हि०) में संसार से चल बसा।

खुसरो शाह बिन इब्राहीम शाह:

बाप के बाद तख्त पर बैठा और जब अलाउद्दीन गौरी ने मुख्य नगर ग़ज़ना की तरफ रूख किया तो यह डर कर लाहौर आ गया और उसी को स्थाई राजधानी बना लिया। अलाउद्दीन नागौरी ग़ज़ना को तबाह करके गौर वापस गया तो खुसरो शाह ने फिर गजना पर कब्ज़ा करना चाहा लेकिन दुर्भाग्य से तुर्कमान गजना पर आपड़े इस लिए खुसरो शाह असफल हिन्दुस्तान वापस आया। आठ साल हुकूमत की ११६० ई० में (५५५ हि०) में देहान्त हुआ।

खुसरो मालिक बिन खुसरोशाह:

खुसरो मलिक लाहौर में अपने बाप के तख्त पर बैठा और हिन्दुस्तान में गजनवी अधिकृत (मक़बूजा) इलाके पर स्थाई तौर पर हुकूमत करने लगा।

११८० ई० (४७६ हि०) में शहाबुद्दीन गौरी ने लाहौर पर हमला किया। खुसरो मलिक किला बन्द हो गया। इस लिए शहाबुद्दीन उस समय गजना वापस चला गया। ११८४ ई० (५८० हि०) में फिर वह हिन्दुस्तान आया और स्यालकोट का किला बनवाकर के वापस गया। ११८६ ई० (५८२ हि०) में जब लाहौर आया तो खुसरो मलिक को बन्दी बना कर के गजना ले गया जहां वह मर गया। उस समय से हिन्दुस्तान गजनवी खानदान से निकलकर गौरी खानदान के कब्जे में आ गया। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

मुकुन तक्या बर मुल्को जाहो हशम
कि पेश अज़ तो हम बूद व बाद अज़ तो हम

हुकूमत, मरतबा और शान पर भरोसा मत करो, ऐ राज पाट वालो, तुम से पहले भी राजपात वाले थे और तुम्हारे पीछे भी होते रहेंगे।

(पृष्ठ ३५ का शेष)

इसका कोई भी सवार बच न सकेगा। और यह नाव अच्छे व बुरे दोषी और निर्दोष,सोते–जागते सब के साथ डूब जाएगी, और उस समय कोई नेकी और कोई बुद्धिमता काम न आएगी।

उनकी दूसरी जिम्मेदारी का कारण यह है कि वह इस देश में मानवता के प्रति आदर, न्याय व समता और सामाजिक इन्साफ का सन्देश लेकर आये थे। और उन्होंने इस देश की बड़ी कठिन घड़ी में मदद की। यह सन्देश उनकी धार्मिक शिक्षाओं में अब पूरे तौर पर सुरक्षित है। अगर उन्होंने देश की सोसाइटी की इस डूबती तथा डगमगाती नैया को बचाने का भरसक प्रयास न किया तो वह खुदा के सामने दोषी और गुनाहगार ठहरेंगे और इतिहास में कर्तव्य को न पहचानने वाले बल्कि अकृतघ्न तथा अपराधी ठहराये जाएंगे।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान

अबू मतलूब

जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने एअ़लान (घोषणा) किया कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, तुम को बता रहा हूं कि ऐ लोगो ला इलाह इल्लल्लाह कहो काम्याब (सफल) हो जाओ, अर्थात मुझे अल्लाह का दूत मानते हुए यह स्वीकार करो और कहो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है तो सफल हो जाओगे।

इस घोषणा (एअ़लान) को सुन कर लोग तीन भागों में बट गये। एक तो वह जो बड़ी नेक रूह़ (सदाचारी प्राण) रखते थे, उन के मन ने तुरन्त इस सत्य को पहचान लिया और मान लिया, जैसे अबू बक्र, माई ख़दीजा, अ़ली, और ज़ैद आदि (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) कुछ लोग पिछले रसूलों के ह़ालात जानते थे कि अल्लाह के रसूल अल्लाह की ओर से निशानियां भी लाते हैं जैसे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़०) कि उन को आग में डाल दिया गया और नहीं जले, ह़ज़रत इस्माईल (अ़०) उनके गले पर पैनी छुरी चली पर उनका गला न कटा, ह़ज़रत मूसा (अ़०) लाठी ज़मीन पर डालते तो वह अजगर बन जाती, फिर जब पकड़ लेते तो लाठी हो जाती, अपनी हथेली बग़ल में ले जाकर निकालते तो बड़ी चमक पैदा हो जाती, फिर बग़ल में ले जाते तो चमक ख़त्म हो जाती, ह़ज़रत ईसा (अ़०) मिट्टी की चिड़िया बनाकर उसमें फूंक मारते तो वह सचमुच की चिड़िया हो जाती अन्धे की आंख पर हाथ फेरते तो उसकी आंखें लौट आतीं वह देखने लगता, सफ़ेद दाग़ वाले की खाल पर हाथ फेरते तो सफ़ेदी ख़त्म हो जाती, क़ब्र के मुर्दे को कहते कि उठ अल्लाह के हुक्म से तो वह क़ब्र से जिन्दा होकर बाहर आ जाता, वह बता देते कि तुम क्या खा कर आए हो और अपने घरों में क्या जमा करके आए हो। (याद रहे कि यह सब हर वक्त नहीं होता बल्कि अल्लाह के नबी अपनी सच्चाई साबित करने को ज़रूरत पर अल्लाह की मदद से ऐसा दिखाते)।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से भी इस प्रकार की अदभुत बातें ज़ाहिर होने लगीं। पहली बात तो यह कि आप न लिखना जानते थे न पढ़ना, ना ही इस संसार में आप का कोई गुरू था लेकिन जो ईश वाणी (वह्य इलाही) आप सुनाते अर्थात क़ुर्आने मजीद उसे सुन कर लोग सरधुन्ते और नेक रूहों को साफ़ लगता कि यह अल्लाह का कलाम (वाणी) है आज भी जिस का जी चाहे परख ले फिर लोगों ने अनगिनत अदभुत बातें देखीं, लोगों ने देखा कि आप जिस राह से निकलते वह राह सुगन्धित हो जाती। कभी पेड़ों से आवाज़ आती और पेड़ आप को सलाम करते, कभी पत्थरों से आप को सलाम करने की आवाज आती। कभी किसी की बन्द मुट्ठी की कंकरियों से केवल अल्लाह के पूज्य होने और मुह़म्मद के रसूल होने की गवाही की आवाज़ आती, कभी आपने चान्द को उंगली से इशारा किया तो वह दो भागों में बंट कर अलग–अलग चमकने लगा और फिर मिल गया, एक सुब्ह आप ने बताया कि मुझ को बुराक़ सवारी पर चढ़ा कर बैतुल मुक़द्दस ले जाया गया, वहां से आसमानों पर ले जाया गया, जन्नत, दोज़ख़ दिखाई गयी अल्लाह तआ़ला से बातें हुईं नमाज़ का आदेश मिला तो कुछ लोगों ने तो आप की सारी बातें तुरन्त मान लीं कुछ लोगों ने जो बैतुल मुक़द्दस देखे हुए थे जब कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने बैतुल मुक़द्दस कभी न देखा था, आप से बैतुल मुक़द्दस का नक़्शा और खम्भों आदि का विस्तार पूछने लगे, आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने सब बता दिया। जिस समय मक्के वालों ने आप का घर क़त्ल के इरादे से घेर रखा था आप का दरवाज़े से निकल जाना कुछ कम अद्भुत न था, फिर आपका पीछा करने वाले सुराक़ा के घोड़े के पैरों का बारबार धंस जाना ख़ुद सुराक़ा को बदल देने वाली बात थी, फिर ग़ारे ह़िरा में अबू बक्र को ज़हरीले सांप डंसता है मगर आप (सल्ल०) के थूक से ज़हर का असर जाता रहता है। रात ही में गार के मुंह पर मकड़ी का जाला तनना और कबूतर का अन्डा देना भी अद्भुत बातों में से है। रास्ते में दुबली बकरी से जिस का दूध सूखा हुआ था दूध निकालना आश्चर्यजनक (ह़ैरत अंगेज़) बात थी। मदीना पहुंच कर जब आप ने मस्जिद बनाई तो उस में खजूर की एक पेड़ी से मिम्बर का काम लिया जाता उस के सहारे आप (सल्ल०) खड़े होकर ख़ुत्बा देते थे जब दूसरा मिम्बर बनाया गया और आप (सल्ल०) उस पर ख़ुत्बा देने चढ़े तो खजूर वाली

पेड़ी से रोने की आवाज आई जिसे सब ने सुना, फिर उस के पास जाकर आप (स०) ने उसे चुप किया। उस मस्जिद में एक चबूतरा था, कुछ लोग अपना सब कुछ छोड़ कर आप से दीन सीखने के लिए उसी चौतरे पर पड़े रहते, उन के खाने पीने का इन्तिज़ाम हुज़ूर (सल्ल०) ही फ़रमाते थे। एक रोज़ वह भूखे थे, अबू हुरैरा हुज़ूर (सल्ल०) के पास थे, वह भी भूखे थे घर से एक प्याला दूध आया, आप ने अबू हुरैरा को हुक्म दिया कि जाओ चबूतरे वालों को बुला लाओ, वह बुला लाए, हुक्म हुआ एक एक आदमी प्याले में मुंह लगाकर पिये सब ने बारी बारी से पिया और पेट भर भर कर पिया फिर अबू हुरैरा को पीने का हुक्म हुआ उन्होनें भी पिया और ख़ूब पेट भर कर पिया अभी प्याले में दूध था और प्याला भरा हुआ था जिसे आप (सल्ल०) ने पिया, यह कोई साधारण बात न थी। इसी प्रकार जब मदीने के गिर्द ख़न्दक़ खोदी जा रही थी और लगभग एक हज़ार सह़ाबा काम कर रहे थे भूखे थे, एक सह़ाबी ह़ज़रत जाबिर ने इरादा किया कि वह ह़ज़रत को खाना खिलाएं उन के घर में साढ़े तीन सेर (एक साअ़) आटा था, उन्होंने एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ कर दिया और जाकर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को चुपके से दअ़वत (निमंत्रण) दे दी, आप (सल्ल०) ने उन एक हज़ार लोगों को जाबिर के यहां खाने की दअ़वत दे दी। आप ने जाबिर के घर जाकर दुआ़ कर दी और आदेश दिया कि रोटी पकाते जाएं सालन निकालते जाएं थोड़े–थोड़े लोगों को खिलाते जाएं, इस प्रकार सारे लोगों ने पेट भर कर खाना खा लिया और अब भी खाना बच रहा। हुदैबीया सन्धि के अवसर पर १४०० लोग थे बताया गया कि पानी नहीं है, आप (सल्ल०) के लोटे में जो पानी है वही है, लोग प्यासे हैं, वुज़ू भी करना है। आप ने लोटे में अपनी उंगलियां डाल दीं बस उंगलियों से पानी उबलने लगा और लोग पानी लेने लगे यहां तक कि सब ने पिया और वुज़ू किया।

इस प्रकार की हज़ारों अदभुत बातें आप से देखी गईं, यह अल्लाह की निशानियां थीं जिन को अ़रबी में मुअ़जिज़ा कहते हैं। जिन लोगों ने आप (स०) की आवाज़ पर तुरन्त आप को अल्लाह का रसूल मान लिया था यह अदभुत बातें देख कर उन के मन और सन्तुष्ट हो गये और बहुत बड़ी संख्या ने यह मुअ़जिज़ात देख कर आप को अल्लाह का रसूल मान लिया परन्तु तीसरा ग्रुप जिस के विषय में कुछ कहते नहीं बनता, उस की तक़दीर में ईमान न था उसकी मत मारी गई और उस ने इन तमाम अदभुत बातों को जादू बताया और ईमान लाने से इन्कार कर दिया।

अल्लाह का शुक्र है कि उस ने हम को ईमान लाने वालों में बनाया और हमारी ख़्वाहिश (इच्छा) है कि सभी मानव आप (सल्ल०) को रसूल मान कर इस संसार में तथा मरने के पश्चात सदैव वाले जीवन (परलोक) में सलफलता प्राप्त करें तथा अल्लाह के प्रकोप, जहन्नम की आग से बच कर उसकी प्रसन्नता तथा जन्नत के रूप में उस के पुरस्कारों के भागी बनें।

अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

सलाम

माहिरूल क़ादिरी

सलाम उस पर कि जिस ने
बेकसों की दस्तगीरी की
सलाम उस पर कि जिस ने
बादशाही में फ़क़ीरी की
सलाम उस पर कि असरारे महब्बत
जिस ने समझाए
सलाम उस पर कि जिस ने
ज़ख्म खा कर फूल बरसाए
सलाम उस पर कि जिस ने
खूं के पियासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिस ने
गालियां सुनकर दुआएं दीं
सलाम उस पर कि दुशमन को
हयाते जावेदां दे दीं
सलाम उस पर अबू सुफ़यान को
जिस ने अमा दे दीं
सलाम उस पर कि जिस के घर में
चांदी थी न सोना था
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया
जिस का बिछौना था
सलाम उस पर जो सच्चाइ की ख़ातिर
दुख उठाता था
सलाम उस पर जो भूका रह के
औरों को खिलाता था
सलाम उस पर जो उम्मत के लिये
रातों को रोता था
सलाम उस पर जो ख़ाक पर जाड़ों
में सोता था
सलाम उस पर कि जिसकी सादगी
दरसे बसीरत थी
सलाम उस पर कि जिस की ज़ात
फ़ख़रे आदमीयत थी
सलाम उस पर कि जिसने झोलियां
भर दीं फ़क़ीरों की
सलाम उस पर कि मुशकें खोल दीं
जिसने असीरों की

क्या अंग्रेजों को भगाना मात्र ही हमारा मकसद था?

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

इतिहास में ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं कि किसी कौम ने किसी कौम पर सैकड़ों वर्ष तक शासन किया हो, और यह तो स्वाभाविक बात है कि कोई कौम बाहर से आये और उसको गुलाम बनाये और सदियों तक गुलाम ही रखे। कुछ कौमों के पतन से अथवा किसी बादशाह या शासक की गलती से ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है। स्वयं हिन्दुस्तान के इतिहास पर नजर डालिये, जब यहां की व्यवस्था बिगड़ी और लोगों की मान मर्यादा खतरे में पड़ गयी, जीवन उनके लिए अभिशाप बन गया, उस समय देश की आबादी साक्षात कहती थी कि कोई और ताकत देश की व्यवस्था संभाले और उन्हें इस अभिशाप से छुटकारा दिलाए।

सन्देश दो प्रकार के होते हैं – एक सन्देश जो आफिशियल होता है, वैधानिक और लिखित होता है और एक सन्देश होता है जो मन–मस्तिष्क और अंतःकरण से निकलता है, आत्मा कहती है और आत्मा सुनती है। कौम की आत्मा जो सतायी हुई है, फरियाद करती है। बच्चों की आह, औरतों की फरियाद, दुखी इंसानों की कराह खुदा तक हजारों पर्दों को फाड़ कर पहुंचती है। जैसा कि अल्लाह के पैगम्बर ने कहा है, मजलूम (उत्पीड़ित) की आह से बचो, इस लिए कि वह सीधे आसमान तक पहुंचती है। खुदा को अपनी मखलूक (सृष्टि) पर प्यार आता है। हमको और आपको न हो, अल्लाह को अपनी मखलूक से हर हाल में प्यार है हर बनाने वाले को अपनी बनायी हुई चीज से प्यार होता है। हमको और आपको न हो, अल्लाह को अपनी मखलूक से हर हाल में प्यार है हर बनाने वाले को अपनी बनायी हुई चीज से प्यार होता है। खुदा की मखलूक (सृष्टि) कहीं हो, जब उसका दिल दुखेगा, जब उसकी मानवता धूल–धूसरित होगी, जब उसकी हस्ती (अस्तित्व) को मिट्टी में मिलाया जाएगा, जब उसके अधिकार का खून किया जाएगा, जब सच्चाई को नकारा जाएगा, जब बच्चों के मुंह से निवाला छीन लिया जाएगा, जब विधवाओं की चीर खींच ली जाएगी, हर तरफ से आवाज आने लगती है, "हमारी मदद करो", हमारी मदद करो। उस समय खुदा यह नहीं देखता कि इन गरीबों तथा दुख के मारे इन्सानों को नजात (छुटकारा) दिलाने वाला कहां से आता है यही मानव इतिहास का बार–बार का अनुभव है कि जब लोग जिन्दा रहते हुए मरणासन्न का जीवन व्यतीत करते हैं। उस समय खुदा उन गरीबों की मदद करता है। और आप देखेंगे कि इतिहास में जब कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई तो बाहर से कोई कौम आयी, उसने देश के प्रशासन व्यवस्था को संभाल लिया लाभ पहुंचाया भी और लाभ उठाया भी। इस स्थिति पर आपके माथे पर जितना भी बल आये आपको अधिकार है। लेकिन मुझे इस पर बिल्कुल आश्चर्य नहीं होता क्योंकि खुदा को हर हाल में अपनी सृष्टि को तसल्ली देना है।

परन्तु यह खुली हुई बात है कि अंग्रेजों को जिन्होंने इस देश पर सौ वर्ष तक शासन किया, इस देश से कोई संबंध न था। यह देश उनके निकट केवल एक दूध देने वाली गाय की हैसियत रखता था। वह तो अपने और अपनी कौम के फायदे के लिए आये थे और चले गये। अगर वह यहां से रेल–पटरियों और मकानों के दरवाजे और खिड़कियों को उखाड़ कर ले जाते तो मुझे कुछ आश्चर्य नहीं था, इसलिए कि उनको इस देश में रहना ही नहीं था।

सच्ची बात यह है कि अंग्रेज इस घर की आग थे। लेकिन जिन लोगों ने इनका चार्ज लिया वह इस देश के मूल निवासी थे, जिनका भाग्य इस देश से जुड़ा था, जिनको हर देश में जीना और इस देश में मरना था और जिन्होंने आजादी की लड़ाई बड़े उत्साह से लड़ी। जिनकी एकता और प्रेम तथा त्याग व बलिदान के यह दृश्य आप में से बहुत से लोगों ने देखे होंगे। किसी ने कभी सोचा भी न होगा कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद इस देश का यह नक्शा होगा जो हम देख रहे हैं। यह देश तो स्वयं देशवासियों के हाथों तबाह हुआ –

'इस घर को आग लग गयी घर के चिराग से'

आज सारे देशों और सारी दुनिया में मानवता जिस प्रकार अपमानित हो रही हैं वह तो एक लंबी

कहानी है। मैं इस पर क्या प्रकाश डालूं। इस के लिए तो बहुत से स्टेज हो सकते हैं मोटी–मोटी किताबें भी लिखी जा सकती हैं। लेकिन आज मुझे आप से आपकी कहानी कहनी है। और मुझे तो अपना और आपका लेखा जोखा करना है। स्वयं मुद्दई (वादी) बनकर मैं आपकी और अपने विरूद्ध आप ही की अदालत में मुकदमा दायर करता हूं। आज हमारे सामने मुल्क का जो नक्शा है क्या आजादी की लड़ाई के नेताओं ने कभी इसकी कल्पना की होगी। मैं समझता हूं कि आजादी की लड़ाई लड़ते समय उन नेताओं में से किसी के मस्तिष्क में यह बात आ जाती तो शायद उनके हाथ पांव फूल जाते और जिस उत्साह के साथ आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे वह समाप्त हो जाती।

हमने देश की क्या हालात बना रखी है। हम अपने हाथों से किस प्रकार इसका हुलिया बिगाड़ रहे हैं। जैसे यह मुल्क किसी दुश्मन के हाथ लग गया है, और वह अच्छी तरह से इससे बदला चुकाना चाहता है अपने दिल का बुखार निकाल रहा है बिल्कुल ऐसा लगता है कि हम इसको उजाड़ कर रख देना चाहते हैं। और इसको किसी काबिल नहीं रहने देना चाहते। इस देश के साथ हमारा मामला एक दुश्मन का सा मामला है। रेलों में सफर करके आप देख लीजिए। बसों में सफर करके आप देख लीजिए। आप किसी विभाग में जाकर देख लीजिए। इन्साफ के साथ क्या हो रहा है। हम स्वयं अपने देश को अपने हाथ से तबाह कर रहे हैं। रेल का हाल यह है कि पंखों, नलों की टोंटियां, खिड़कियां, सीटों की रैगजीन चुराई जाती हैं। गलियों में मेनहोल के ढक्कन चुराये जाते हैं इसकी भी परवाह नहीं होती कि अबोध बच्चों की इसमें जान चली जाएगी।

ऐसी छोटी–छोटी बातें ऐसे जनसमूह के सामने कहते हुए मुझे तकलीफ होती है। मैं समझता हूं मैं अपने स्तर से गिर रहा हूं किन्तु सच्चाई है जिसके बिना वस्तुस्थिति का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। फिर यह देखिए, क्या एक नागरिक दूसरे नागरिक को अपनाभाई समझता है। और यह समझता है कि वह खुदा का बनाया हुआ इन्सान है। बिल्कुल नहीं। हर व्यक्ति दूसरे को इस दृष्टि से देखता है कि वह एक शिकार है। आज हमारे समाज और प्रशासन में इन्सान से एक घातक जानवर जैसा व्यवहार किया जाता है। आज यह हाल हो गया है कि हम अपने ही तरह के इन्सानों को अपने देशवासियों को, इस देश के नागरिकों को अपना भाई नहीं समझते हैं।

हमारे अन्दर रिश्वतखोरी तथा भाई–भतीजावाद की प्रवृत्ति व्याप्त हो गयी है। वही देश है जो अंग्रेजों के जमाने में था, मगर न मालूम इसकी क्षमता को क्या हो गया है। न व्यवस्था है, न शान्ति है। किसी व्यक्ति को यह खुशियों भरा एहसास नहीं कि वह अपने घर में है लोग बड़ी–बड़ी इज्जत, बड़ी–बड़ी दौलत छोड़कर अपने वतन आते हैं कि वतन की बात ही दूसरी होती है अपना घर और अपना मुल्क कहने का अर्थ यह है कि लोगों को जहां इत्मीनान, इज्जत और खुशी मिले एक को दूसरे पर भरोसा हो, एक–दूसरे के दुख–दर्द में काम आये, इसी का नाम है, अपना घर अपना वतन। अपने घर और अपने वतन का मतलब तो यह है कि इन्सान को वहां ज्यादा आराम, खुशी शान्ति मिले, और अगर यह प्राप्त न हों तो ऐसे वतन से क्या महब्बत करेंगे।

१९४७ ई० में अंग्रेजों के चले जाने के बाद मानव–प्रेम सहानुभूति, सत्यनिष्ठा व प्रेम का ऐसा आदर्श युग आना चाहिए था कि लोग दूर–दूर से देखने आते। मैं डंके की चोट पर कहूंगा कि हमने अपने को इस देश की व्यवस्था चलाने योग्य सिद्ध नहीं किया। हमारा देश प्रेम नकारात्मक था रूचि सकारात्मक न थी। अर्थात हमारी वास्तविक रूचि व क्षमता अंग्रेजों को निकालने पर केन्द्रित थी। देश को बनाने संवारने से हमें ज्यादा दिलचस्पी न थी और न इस क्षमता का हमने सबूत दिया। बहुत से लोग लड़ाई जीत लेते हैं और सुलह हार जाते हैं, बहुत सी कौमें हैं जो नार्मल हालात में उस क्षमता का सबूत नहीं देतीं जो असामान्य परिस्थिति में उन्होंने दिया। क्या अंग्रेजों को भगाना मात्र ही हमारा मकसद था?

युद्ध के समय आदमी का मुकाबला करने की ताकत उसकी तमाम कमजोरियों पर परदा डाल देती हैं। हम हिन्दुस्तानियों में कमजोरियां थी, आजादी की लड़ाई ने इस पर परदा डाल दिया था। जब अशान्ति समाप्त हुई और हमारी परीक्षा की घड़ी आयी तो हम असफल हो गये। दौलत जब तक नहीं होती बहुत से लोग तपस्वी बन जाते हैं किन्तु दौलत आने के बाद उनकी जिन्दगी का रहन–सहन बदल जाता है। इस प्रकार का अनुभव हमें रात–दिन होता रहता है। युद्ध काल में

इन चीजों पर ध्यान देने की फुरसत नहीं होती। लड़ाई की भाप निकल जाने के बाद उसकी राह में जो चीजें होती हैं वह उभर जाती हैं जब आजादी की लड़ाई खत्म हुई तो मालूम हुआ कि हम अर्ह नहीं। हम सिर्फ अपना लाभ चाहते हैं। हमें दूसरों को फायदा पहुंचाने से कोई दिलचस्पी नहीं।

आजादी की लड़ाई के समय हम गरीबों की सेवा करते फिरते थे, हमारे साथी जेल में थे, हम उनके घरों की सेवा करते थे। तमाम नफरतों (घृणा) और कटुताएं दूर हो गयी थीं। हिन्दू–मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं था। आजादी की लड़ाई की इस आग ने हमारी आपस की दुश्मनी को पिघला दिया था। लड़ाई की अवधि में तो सुधार का अवसर नहीं मिला था। लेकिन आजादी की लड़ाई शुरूअ करने से पहले और आजादी मिलने के बाद हमें कितना मौका मिला था मगर हमने अपनी दीक्षा का इस अवधी में कोई सामान नहीं किया। सन् १९४७ से अब तक कितना अवसर मिला। हम में कितनी संस्थाएं हैं, कितने लेखक व साहित्यकार हैं जिन्होंने मनुष्य में सही शहरी एहसास, मानवता के प्रति आदर की भावना और सच्चा देश प्रेम पैदा करने का सच्चे दिल से प्रयास किया है? आज वस्तुस्थिति की जिम्मेदारी हम सब की है इस गन्दे पानी में हम सब गले–गले डूबे हैं इस गन्दे पानी की आलोचना तो हर व्यक्ति करता है। मगर उसकी कोशिश यह होती है कि इसी में डूबकी लगा ले और हो सके तो उससे अपने फायदों के मोती निकाले।

मित्रो ! देश इस समय बहुत बड़े खतरे से ग्रस्त है बाहर से हमें कोई खतरा नहीं, वह जमाना गुजर गया जब एक देश दूसरे देश पर हमला करता था और एक नेशन दूसरे नेशन को गुलाम बनाता था। इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता कि आज की हालत में कोई देश दूसरे देश पर अधिकार करे। किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी है कि हर व्यक्ति परेशान है और वह किसी नजात (मोक्ष) दिलाने वाले की प्रतीक्षा में है। हमारे देश के लोग इस वस्तुस्थिति से तंग आ चुके हैं कि न तो आजादी के उच्च मूल्यों का खयाल करते हैं और न उस विद्वतापूर्ण साहित्य की कोई परवाह करेगे जो आजादी की गुणवत्ता पर लिखा गया है और न उस समय की मुसीबतों का खयाल करेगे जो अंग्रेजों के समय में यहां के वासियों ने सहन की हैं। वह तो उस स्थिति को बदलने के इच्छुक हैं जो इस देश की आजादी से पूरा फायदा उठाने में बाधक हैं।

भारत की आजादी का मानव इतिहास में एक स्थान है। किन्तु जिस देश के रहने वाले उस देश के प्रशासन से निराश हों, वह यह समझते हैं कि इस देश में हमारी जायज मांगे हमें नहीं मिल रही हैं हम शान्ति व सम्मान का जीवन नहीं गुजार सकते, इससे बढ़कर प्रशासन पर से जनसाधारण का अविश्वास और क्या हो सकता है? परन्तु यह करोड़ों निर्दोष जनता, यह रास्ते का चलने वाला आम आदमी जिसने राजनीति का एक शब्द भी नहीं पढ़ा है, यह राजनीतिक दांव पेंच नहीं जानता। जो कहता है सही कहता है। यह उसके दिल की आवाज होती है।

मैं किसी पार्टी, किसी एक समुदाय, एक वर्ग को नहीं कहता बल्कि पार्टियों, एक–दूसरे के बाद की आने वाली हुकूमतों तथा नये प्रयोगों की ओर बुलाने वाले राजनीति, विशेषज्ञों और हुकूमत के उम्मीदवारों सब को कहता हूं कि उन पर से जनसाधारण का विश्वास उठ चुका है।

किसी देश अथवा नेशन की सुरक्षा व स्थायित्व के लिए तथा व्यक्तियों को स्वार्थ, अत्याचार व बेइमानी और खयानत से बचने के लिए अस्ल ताकत तो खुदा पर अकीदा (विश्वास) और उसका डर है जब किसी व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में यह विश्वास घर कर जाए कि एक ऐसी महाशक्ति है जो अंधेरे उजाले में मुझे देखती है और मुझे उसके सामने जवाब देना है, तो वह कोई गलत काम नहीं कर सकता। सुधार के लिए इससे अच्छा कोई ढंग नहीं। यह वह सही शक्ति है जो चोरों को रक्षक बनाती है।

अंत में मैं अपने मसुलमान दोस्तों और भाइयों से कहूंगा कि उनकी इस मौके पर दोहरी जिम्मेदारी है एक तो यह कि उसकी धार्मिक पुस्तक कुरआन और उनके पैगम्बर की शिक्षा उनको न सिर्फ इस आम बिगाड़, इस फैली हुई आग तथा दौलत की पूजा के इस बहते हुए गन्दे पानी से बचने का सदुपदेश देती है बल्कि उन पर रोकने और इससे लोगों को बचाने की जिम्मेदार भी ठहराती है। उनके पैगम्बर ने साफ तरीके पर समझा दिया है कि अगर किसी नाव के किसी सवार को भी ऐसे अप्रिय कार्य से दूर रखने की कोशिश न की गयी जिससे यह नाव खतरे में पड़ जाती है, और यह डूबी तो फिर

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इन्सानी ज़िन्दगी में सभ्य वस्त्र का महत्व

मौ० असरारूल हक़ क़ासमी

इंसान की जिन्दगी में लिबास का बड़ा महत्व है अल्लाह ने फरमाया – अनुवाद ऐ इंसानो ! हमने तुम्हारे लिए लिबास (वस्त्र) उतारा है और तक़वा (संयम) का लिबास सबसे अच्छा है।'' (अल एराफ : २६) कुर्आन मजीद में एक जगह फरमाया गया – अनुवाद –''अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हें गर्मी से बचाता है।'' (अन्नहल–८१) इन दोनों आयतों से लिबास का महत्व और बड़ाई जाहिर होती है। लेकिन अब प्रश्न यह है कि क्या हर प्रकार का लिबास पहन्ना उचित है या किसी खास किस्म के पहन्ने ही की अनुमत है यह प्रश्न यद्यपि हर जमाने में बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है तब भी वर्तमान युग में खास तौर से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस जमाने में साधनों की रेलपेल के कारण संसार में हर जगह आना जाना आसान हो गया है और दुन्या भर की जानकारी इकट्ठा करना भी इंसान के लिए आसानतर हो गया है। खास तौर से मीडिया ने इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहया है। चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया सभी दुन्या भर के महत्वपूर्ण घटनाओं की प्रमुख समाचार शीर्षक बनाने की कोशिश करते हैं। इसलिए सुबह सवेरे उठने के साथ ही दुन्या भर में जहां भी प्रमुख घटनाएं घटित होती हैं, उनके बारे में जानकारी मिल जाती है। परन्तु दिन भर के कल्चरों को प्रभावित करने में इलेक्ट्रानिक मीडिया अधिक खतरनाक रोल अदा कर रहा है। टीवी चैनलों के द्वारा लोगों को घर बैठे ही मालूम हो जाता है कि दूसरे देश के लोग कैसे जीवन व्यतीत करते हैं, किस प्रकार के कपड़े पहनेते हैं और किस तरह का खाना खाते हैं। मुख्यतः पश्चिमी सभ्यता का प्रदर्शन बड़े पैमाने पर किया जाता है। इस लिए पूर्वी देशों के लोग भी पश्चिमी कल्चर व सभ्यता को रोजमर्रा अपनी आंखों से देखते हैं। पश्चिमी सभ्यता पर नवीनता का वर्चस्व (ग़लबा) है जिस में हर तरह का दिखावा और फैशन परस्ती कूट कूट कर भरी हुई है। इस लिए नई नस्ल को पश्चिमी सभ्यता बड़ी हद तक लुभाती है। फलस्वरूप नौजवान नस्ल भी इसी प्रकार का लिबास पहनना पसन्द करने लगी है। इस संसार के कल्चर नई सभ्यता से प्रभावित होने लगे हैं बल्कि बाज टीकाकारों का तो विचार है कि अगर आधुनिकता, पाश्चात्यपन और ग्लोबलाइजेशन की यही लोकप्रियता आगे भी जारी रही तो न जाने कितने प्राचीन कल्चर और सभ्यताएं खत्म हो जाएंगी।

जहां तक पश्चिमी प्रकार के कपड़ों का संबंध है तो उन्हें आंख बन्द करके सभ्य कहना ठीक नहीं होगा। ऐसे ही मौजूदा समाज में विभिन्न प्रकार के जो वस्त्र पहने जाते हैं उन को उचित कहने का भी जल्दी फैसला नहीं किया जा सकता। कुर्आन मजीद की बयान की हुई आयत (सूरह एराफ – २६) से साफ तौर पर मालूम होता है कि लिबास का बुनियादी मकसद गुप्त अंग ढाकना है। अगर गुप्त अंग को ढांकने के उद्देश्य को सामने रख कर इस जमाने के लिबास को देखा जाए तो अधिकतर लिबास ऐसे नज आएंगे कि जिन से गुप्त अंग के ढकने का उद्देश्य पूरा नहीं होता। पश्चिमी में मर्द और औरतें दोनों सामान्य तौर पर कम से कम लिबास पहनती हैं जिन से शरीर का अधिकांश भाग खुला रहता है। अब धीरे–धीरे पूर्वी देशों में भी पश्चिमी ढंग के लिबास का चलन बढ़ता जा रहा है। औरतें जिनका लिबास बहुत सभ्य होना चाहिए और उनके शरीर के तमाम अंग कपड़ों से ढके होने चाहिए वह मर्दों से भी कम लिबास पहनती नजर आती हैं। हैरान करने वाली बात तो यह है कि वर्तमान समाज में ऐसे लिबास का चलन तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है जो देखने में तो शरीर के अधिक भाग को छुपाए होते हैं लेकिन वास्तव में इन लिबासों से शरीर के अंग साफ नजर आते हैं।

लिबास के सिलसिले में औरतों को अधिक सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि उनके अंग के नग्न होने से खतरनाक नतीजे सामने आने की सम्भावनाएं होती हैं। औरतों को ऐसा लिबास पहनने से इस्लाम ने साफतौर से मना किया है जिस के पहनने के बाद उन का शरीर नग्न लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो औरतें कपड़े पहन कर भी नंगी रहती हैं मर्दों को आकर्षित

करती हैं, खुद आकर्षित होती हैं और सरों पर बालों का गुच्छा बनाती हैं, वह जन्नत में नहीं जाएंगी और न उस की महक पायेंगी। यहां कपड़े पहन कर नंगे रहने का अर्थ यह है कि या तो उनके वस्त्र इतने बारीक हों कि उनमें से उनके शरीर का अंग झलकता हुआ नजर आए या वह इतना चुस्त हो कि कपड़े पहनने के बावजूद भी शरीर के अंग के उतार चढ़ाव साफ दिखाई दें। हजरत उसामा बिन जैद रज़ि० की इस हदीस से भी बड़ी हद तक स्पष्ट है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको कतबियों का बनाया हुआ कपड़ा दिया। उन्होंने अपनी बीवी को दे दिया। आप (सल्ल०) ने जब यह सुना तो फरमाया कि अपनी बीवी से कहो कि इस के नीचे कपड़ा लगा लें नहीं तो खतरा है कि उन के शरीर की बनावट नजर आएगी। (अहमद, बेहक़ी)।

औरतों को अजनबी मर्दों के सामने न आने का जिस ताकीद के साथ आदेश दिया गया है उस का तकाजा है कि औरतें ऐसा लिबास पहनें जिस से पूरा शरी पूरी तौर से छुप जाए और शरीर के अंगों के उभार भी नजर न आएं क्योंकि बेशर्मी के वस्त्र पहनने से शीलता व लज्जा जाती रहती है। और जब शर्म व लज्जा समाप्त हो जाती है तो अनगिनत समस्याएं जन्म लेती हैं। तरह–तरह की समस्यायों से महिलाओं और समाज को सुरक्षित रखने के लिए इस्लाम ने औरतों को पर्दे में रहने का आदेश दिया है। अल्लाह तआला उपदेश देता है अनुवाद : ऐ नबी! अपनी बीवियों, बेटियों और मोमिनीन की औरतों को बता दीजिए कि बाहर निकलें तो अपने चेहरे पर पल्लू लटका लिया करें। इस तरह वह आसानी से पहचान ली जाया करेंगी और सताई न जायेंगी और अल्लाह तआला बड़ा ही माफ करने वाला और मेहरबान है (अलएहज़ाब : ५६) इस आयत से मालूम होता है कि महिलाएं पर्दे का पूरा ख्याल रखें। दूसरी बात आयत से यह मालूम होती है कि पर्दा करने से औरतें सताने से बच जायेंगी। गोया जिस पर्दे के सम्बन्ध में तरह तरह के सवाल उठाए जाते हैं वह महिलाओं की सुरक्षा का महत्वपूर्ण साधन है। यहां चेहरा का अर्थ केवल चेहरा ही छुपाना ही नहीं है बल्कि शरीर के दूसरे अंग भी छुपाना है। हजरत उबैद सलमानी से जब मुहम्मद बिन सीरीन ने इस आयत की व्याख्या चाही तो उन्होंने जबान से कुछ बताने के बजाए अपने चादर ली और उसी तरह ओढ़ कर दिखाई कि सिर, चेहरा आदि सब कुछ छिपा लिया और केवल आंख खुली रखी। सहबियात पर्दे का पूरा ख्याल रखती थीं और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी बेपर्दा नहीं होती थी। एक बार की घटना है कि "हजरत उम्मे खलाद (रजि०) के पुत्र शहीद हो गये। उम्मे खलाद अपने बेटे के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुईं लेकिन इस औसर पर भी उनके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थीं। पर्दे के इस हद तक आयोजन (एहतमाम) को देख कर लोगों ने मालूम किया कि बीबी! इस समय भी तुम्हारे चेहरे पर नकाब पड़ी है। हजरत उम्मे ख़लाद ने इतमिनान के साथ जवाब दिया हां मैंने बेटा खोया है अपनी हया (लज्जा) नहीं। मौजूदा जमाने में बनाव सिंगार करके और तरह तरह के फैशन के लिबास पहन कर पार्टियों और दावत में जाने का चलन बढ़ रहा है। इन अवसरों पर आमतौर से बहुत सी महिलाएं अपने आप को और अपने सिंगार को पूरे तौर पर नही छुपातीं। ऐसा करने से सख्ती के साथ मना किया गया है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फरमाता है – अनुवाद – "और बनाव सिंगार न दिखाती फिरो जिस प्रकार जाहीलियत के दौर में अपनी सुन्दरता व सिंगार का प्रदर्शन करती थी।" (एहजाब–३३) इस आयत की रोशनी में साफ मालूम होता है कि महिलाओं को तरह तरह का मेकअप करके बाहर निकलना, नग्न और चुस्त कपड़ा पहन कर अपने शरीर का प्रदर्शन करना ठीक नहीं है। एक और आयत में बनाव सिंगार को छुपाने की ताकीद की गयी है। अल्लाह का उपदेश है, "और अपने बनाव सिंगार को जाहिर न होने दो हां जो (तुम्हारे इरादे के बगैर खुद बखुद जाहिर हो जाए। (अन्नूर–३१) इन आयतों की रोशनी में भी इस बात का निश्चय करना आसान हो जाता है कि मोमिन औरतों को किस तरह लिबास पहनना चाहिए और किस तरह लिबास नहीं पहनना चाहिए। मोमिन औरतों को ताकीद की गई है कि वह अपनी निगाहों को नीची रखें। अल्लाह का उपदेश है – अनुवाद – "और मोमिन औरतों से कहिये कि अपनी निगाहें नीची रखें।" (अन्नूर – ३१) और स्पष्ट रूप से फरमाया गया है "और अपने सीनों पर दुपटटों का आंचल डाले रहें।" (अन्नूर – ३१) और हर हाल में गुप्त अंगों को छुपाने की ताकीद की गयी। अल्लाह का फरमान है "अपने गुप्त अंगों की सुरक्षा करो।" (अन्नूर–३५)

क्या इस्लाम बल-प्रयोग से फैला ?

डॉ० शमा खातून

– क्या हमारे देश में इस्लाम बल के प्रयोग से फैलाया गया?

जवाब : इस विषय पर सबसे पहले प्रस्तुत हैं गांधी जी के विचार, जो उन्होंने "यंग इंडिया" में १९२४ ई० में प्रस्तुत किये थे–

"मुझे पहले से अधिक विश्वास हो गया है कि वह तलवार नहीं थी, जिसने इस्लाम के लिए जगह बनायी। वह पैगम्बर की सरलता, सादगी और उनकी पूर्ण तन्मयता, अपने प्रण और वचनों के प्रति उनका सच्चा होना, मित्रों और अनुयायियों के प्रति उनका गहरा लगाव, उनकी बहादुरी, उनकी निर्भयता, ईश्वर के प्रति उनका पूर्ण विश्वास और उनका अपना मिशन था। वह तलवार नहीं हो सकती जो हर चीज उनके सामने ला देती है और न हर परेशानी और अशान्ति पर तलवार से काबू पाया जा सकता था।"

इस्लाम वह मजहब है, जिसे बदनाम करने की पूरी कोशिश की गयी है। पिछले सौ वर्षों में दुनिया भर में, विशेषकर पश्चिम में, इस्लाम के विरूद्ध जितनी पुस्तकें लिखी गयी हैं, उनकी यदि गिनती की जाए तो प्रतिदिन एक पुस्तक बनती है। इन पुस्तकों द्वारा तथा दूसरे माध्यमों से लोगों को इस्लाम के विरूद्ध भ्रमित किया गया है। यही कारण है कि इस्लाम की वास्तविक छवि से अधिकांश लोग अनभिज्ञ हैं।

हमारे देश में या दुनिया में कहीं भी जो लोग भी इस्लाम के विस्तार में बल प्रयोग की बात करते हैं, वे न तो इस्लाम के विषय में कुछ जानते हैं और न ही उन्होंने इस्लाम के इतिहास का अध्ययन किया है। यह उन पुस्तकों का ही प्रभाव है कि लोग जान–बूझकर सच्चाई का इनकार करते हैं। ऐसा नहीं है कि इस्लाम के विरूद्ध बातें करने वाले तमाम लोग सच्चाई से अनभिज्ञ हैं, बहुत से लोग सच्चाई को जानते हैं और समझते हैं लेकिन उसे जुबान पर लाने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं।

इस्लाम के फैलाव को बल प्रयोग से जोड़ने वाले मुस्लिम शासकों को उद्धृत करते हैं। शासक चाहे कोई भी हो उसका उद्देश्य कभी भी धर्म प्रचार नहीं रहा है। राजाओं और बादशाहों ने अपनी सत्ता विस्तार के लिए ही लड़ाइयां लड़ी हैं। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि कुछ राजाओं ने अधिक राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए अपने राजनीतिक युद्धों को धर्म का नाम दे दिया या धर्म के नाम पर राजनीतिक लड़ाइयां लड़ीं।

यह काम केवल मुस्लिम शासकों ने ही नहीं किया, बल्कि उनसे कहीं ज्यादा ईसाई शासकों ने किया है। राजनीतिक लड़ाइयों को धर्म युद्ध बनाने में इतिहासकारों ने भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस सच्चाई से भी इन्कार किया जाता रहा है कि हमारे देश में इस्लाम मुस्लिम शासकों के माध्यम से नहीं फैला है। यदि मुस्लिम शासक इस्लाम को फैलाने का कार्य करते और इसके लिए बल का प्रयोग करते तो परिणाम वह नहीं होता जो आज है। आखिर मुसलमानों ने सदियों शासन किया है। बल प्रयोग की बात तो एक ओर यदि मुस्लिम शासकों ने इस्लाम को फैलाने की हल्की–सी भी कोशिश की होती तो मात्र उनके प्रभाव के कारण स्थिति बदल जाती।

सच्चाई यह है कि भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन से बहुत पहले अरब व्यापारियों के माध्यम से यहां इस्लाम पहुंच चुका था। उन व्यापारियों के चरित्र और आचरण से प्रभावित होकर यहां के लोगों ने इस्लाम को अपनाना शुरू कर दिया था। बाद में सूफियों और फकीरों ने आकर गांव–गांव घूम कर लोगों को इस्लाम की शिक्षाओं से अवगत कराया। इन फकीरों ने भी किसी पर इस्लाम स्वीकार करने के लिए दबाव नहीं डाला बल्कि उनके आचरण और व्यवहार से प्रभावित होकर लोग खुद इस्लाम की ओर आकर्षित हुए।

यह गलतफहमी भी निकाल देनी चाहिए कि उन पीरों और फकीरों ने इस्लाम के प्रचार के लिए यह सब कुछ किया, बल्कि उन्होंने यह सब कुछ मानवता के लिए किया। वे मानवता के सच्चे सुधारक थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि इस्लाम एक रास्ता है जो इन्सानों की दुनिया भी बना सकता है और आखिरत भी । इसलिए उन्होंने इसे लोगों के सामने प्रस्तुत किया इसकी विशेषताएं बतायीं, इसके अपनाने के लाभ और न अपनाने की हानियां बतायीं और निर्णय उन पर छोड़ दिया। इस्लाम अपने स्वभाव से भी जोर जबरदस्ती का विलोम है। इसका अर्थ ही है अमन और शान्ति। इसे किसी पर जबरदस्ती थोपना इसके स्वभाव के खिलाफ है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

अल्हाज अब्दुर्रज्जाक अल्लाना नहीं रहे

शाहिद हुसैन

मुम्बई के मशहूर व मारूफ और साहिबे खैर ताजिर जनाब अलहाज अब्दुरज्जाक अल्लाना साहिब का १७ जून २००७ को थोड़ी बीमारी के बाद इन्तिकाल हो गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून।

अलहाज अल्लाना साहिब का शुमार मुल्क के बड़े ताजिरों (**Super Star Exporters**) में होता था इन्डस्टरीयल सिटीज हैदराबाद, औरंगाबाद, कोलकाता, कानपुर, उन्नाव वगैरह के अलावा विदेशों में खास कर दुबई में उनको अल्लाना ग्रुप से जाना जाता है।

कारोबार की वुसअत के साथ–साथ मरहूम खैर के कामों में बड़ा हिस्सा लिया करते थे, बड़ौदा के इस्लामिक सेन्टर में जनाब अल्लाना साहिब की तजवीज पर हजरत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी (रह०) के नाम से एक हाल मंसूब किया गया जब कि अभी हजरत से उन की मुलाकात भी न थी, जिस से मरहूम का हजरत (रह०) से गायबाना तअल्लुक का पता चलता है।

नव्वे की दहाई में हजरत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) के साथ एक नशिस्त में मेरा तआरूफ अल्लाना साहिब से हुआ था, फिर रफता रफता वह तअल्लुक एअतिमाद (विश्वास) में तब्दील होता चला गया।

मरहूम दीनी इदारों के सिलसिले में मुझ से दर्याफ्त करते और बड़ी फराख दिली से तआवुन फरमाया करते थे, उन का यह तअल्लुक हजरत (रह०) के बाद उन के जानशीन मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी मद्द जिल्लहू और उनके तअल्लुक वालों से बदस्तूर बाकी रहा।

नदवतुल उलमा उसके मदारिस मुलहका, अमारते शरअीया बिहार, जामिया अरबीया हथौड़ा और दारूल उलूम देव बन्द के हल्के नीज हिन्दुस्तान के बेशुमार मदारिस व मसाजिद की तामीर में खुसूसी और वकीअ तआवुन फरमाया करते थे।

पसमांदगान में मरहूम की अहलिया, तीन साहिब जादगान जनाब इरफान अल्लाना, फीरोज अल्लाना और सिराज अल्लाना हैं जनाब इरफान अल्लाना भारत में और दूसरे भाई खलीजी मुल्कों में कारोबार संभाले हुए हैं।

मैं हजरत नाजिम साहब और इदारे की जानिब से पसमांदगान की खिदमत में ताजियत पेश करता हूं और सब्रेजमील की दुआ करता हूं। नीज सच्चा राही पढ़ने वालों से मगफिरत की दुआ की गुजारिश करता हूं। अल्लाह तआला मरहूम की जानिब से किये गये खैर के तमाम कामों को कबूल फरमाए जो आखिरत में काम आएं। आमीन।

ऐ अल्लाह उन के कसीर में बरकत और हमारे कलील में कनाअत अता फरमा और खैर के तमाम कामों को जारी व सारी फरमा। आमीन।

काबिले दाद सुनीता

हमारी दुआ है कि सुनीता विलियम्स भलीभांति वापस हों और विज्ञान जगत का यह एक तारीख साज कारनामा वकूअ पजीर हो जाये। अपने अपने अकीदे के अनुसार सुरक्षित वापसी की दुआयें पूरे संसार में की जा रही हैं।

यकीनन कारनामा काबिले दाद और इंसानी अजाएम का आइनादार भी है। काइनात के बनाने और चलाने वाले ने हजरत इंसान के अन्दर कुछ करने का जज्बा रखा है जिसे बररूये कार लाते हुए इंसान इरतिका व अरूज की मंजिलें तय कर रहा है और करता रहेगा।

..... सितारों से आगे जहां और भी हैं

तलाश व जुस्तजू का यह सिलसिला रहती दुनिया तक कायम रहेगा। इन्सान की इस खूबी से फरिश्ते वाकिफ न थे। तभी तो उन्होंने हैरत के साथ अपने खालिक से सवाल किया था। यह मिट्टी का पुतला ??

जवाब मिला था ....आदम की खूबियों और सलाहियतों से तुम वाकिफ नहीं !!!

काइनात के बनाने वाले की जानिब से इन्सान की खूबियों और बे पनाह सलाहियतों का हौसला अफ्ज़ा एअलान उस के अजाएम को महमेज़ करता रहेगा। तारीख साज कारनामे अंजाम पाते रहेंगे, क्योंकि इंसानी सरिशत में इंजिमाद रखा ही नहीं गया है। वह हमेशा पारह की तरह बेचैन और रवां दवां रहने के लिए बेताब हैं।

सुनीता ने इन ही अजाएम के साथ अपना सफर शुरूअ किया था जिस के बेहतर अंजाम का बेचैनी से दुनिया को इन्तिजार है। इससे पहले भी एक खातून कल्पना चावला (खुशकिसमती से वह भी हिन्द नजाद थीं) ने कारनामा अंजाम दिया था। कल्पना के अंत की कल्पना से पूरी दुन्या मुजतरिब और बेचैन है। गोया कि साइंस की दुन्या इर्तिका (उन्नति) की तमाम तर मंजिलें तै करने के बावजूद हर मरहले में अपनी बेबसी और बेकसी का एअतिराफ करने पर मजबूर है, इंसान भूल जाता है कि सब कुछ होने के बावजूद इख्तियारे कुल्ली किसी और के हाथ में है और यह बार–बार उसे याद दिलाया जाता है।

हम यहां किसी अकीदे की बात नहीं कर रहे हैं बल्कि खालिक और मख्लूक के रिश्ते को बताना चाहते हैं कि उस ने इन्सान को जमीन का खलीफा बनाया है और दुन्या ही नहीं कायनात को उस के लिए मुसख्खर फरमाया है लेकिन ... ।

हम जब आजमाइश या मुसीबत में होते हैं तो उसे याद करते हैं और काम्याबी को अपना कारनामा करार देते हैं। यही वह मकाम है जहां खालिक से मखलूक का नेटवर्क काम करना छोड़ देता है। (शाहिद हुसैन)

यह पंक्तियां सुनीता के जमीन पर वापसी से पहले लिखी गयी थीं।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

● युद्ध से लौटे अमेरिकी सैनिक कर रहे हैं खुदकुशी

एक अध्ययन से खुलासा हुआ है कि अमेरिका में बुजुर्ग सैनिकों में खुदकुशी की प्रवृत्ति दोगुनी है। खासकर उन सैनिकों की जो युद्ध में अपंग हो गये हैं या फिर गहरे आघात का शिकार हुए हैं। इससे सैन्य अधिकारी इराक और अफगानिस्तान से लौटने वाले सैनिकों की सेहत को लेकर एक नयी चिंता से ग्रस्त हो गये हैं।

शोधकर्ताओं के अनुसार, जो सैनिक लड़ाई के दौरान अपंग या फिर किसी भावनात्मक चोट के शिकार हुए, उनमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति दोगुनी मिली। अध्ययन के नतीजे जनरल आफ एपिडेमियोलोजी एंड कम्युनिटी हेल्थ में प्रकाशित हुए हैं। अनुसंधानकर्ताओं ने करीब तीन लाख २१हजार सैनिकों की पृष्ठ भूमि का अध्ययन किया। जिसमें पाया गया कि इनमें से एक तिहाई बुजुर्ग सैनिक वह थे, जो १९१७ से १९६४ के मध्य लड़ाई का हिस्सा थे। इस अवधि में दो विश्व युद्ध, कोरिया संघर्ष, वियतनाम में गृहयुद्ध और पहला खाड़ी युद्ध हुआ था। शोध में इराक व अफगानिस्तान से लौटे सैनिकों के आंकड़े शामिल नहीं हैं। लेकिन उनकी सेहत को लेकर होशियार किया गया है।

अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि जब ये बुजुर्ग सैनिक बरसों पहले की लड़ाई से उपजे अवसाद से बाहर नहीं निकल पाये हैं तो फिर नौजवानों का क्या होगा। इस लिए सैन्य प्रशासन को लड़ाई से वापस आने वाले सैनिकों की गहन जांच करानी चाहिए क्योंकि वह खून और तबाही का ऐसा मंजर देख कर लौटते हैं जो लंबे समय तक नहीं भूलता है। मसलन अगर वह गलती से किसी निर्दोष को मार बैठे हैं तो यह बात जिन्दगीभर उन्हें कचोटती है। इसके अलावा और भी घटनाएं उन्हें अवसाद का शिकार बना सकती हैं। जिस कारण वह आत्महत्या कर सकते हैं।

● अमेरिका की ४० प्रतिशत महिलाएं उत्पीड़न का शिकार

अमेरिका में एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसारर ४० प्रतिशत महिलाएं अपने पति, जानने वालों और प्रेमियों के हाथों शारीरिक या मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न से दोचार होती हैं। एक दूसरे सर्वे में पता चला है कि लातों और घूंसों से मार खाने वाली ऐसी औरतों की संस्था इस मामिलों की शिकायत दर्ज कराने वाली औरतों के मुकाबले चार गुना से अधिक हैं जबकि अपने स्वास्थ्य की खराबी के बारे में बताने वाली औरतों की संख्या वास्तविक संख्या से तीन गुना कम है। डाक्टर राबर्ट थाम्सन के अनुसार औरतों के उत्पीड़न और मारपीट की दशा यह हो चुकी है कि उन पर दया आती है लेकिन शर्म और बदनामी के कारण महिलाएं शिकायत दर्ज कराने के बजाए उत्पीड़न के इस जहर को पी जाती हैं। उन का कहना है कि ऐसी औरतें बाद के दिनों में इंतिहाई डिपरेशन का शिकार हो जाती हैं और मारपीट के करण वह पीठ दर्द से लेकर कैंसर जैसी बीमारियों से ग्रस्त हो जाती है। डाक्टर थाप्सन के नेतृत्व में १८ से ६४ वर्ष की उम्र की ३४०० से अधिक औरतों पर कराए गये अध्ययन में ४४ प्रतिशत औरतों ने पति, मित्र या प्रेमियों के द्वारा मारपीट, गालीगलौज की शिकायत की। अचम्भे की बात यह है कि इन औरतों का सम्बन्ध समाज के उच्च वर्गों से था और यह उच्च शिक्षा प्राप्त भी हैं। इन में से १३ प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उनपर उत्पीड़न का सिलसिला गुजरे २० वर्षों से जारी है।

● अमेरिका की छवि खराब हुई

बुश प्रसाशन की आतंक के खिलाफ जंग के चलते ऐशियाई देशों में अमेरिका की छवि खराब हुई है। योमियुरी सिंबुन, कोरिया टाइम्स और गैलप समूह द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार ऐशियाई देशों में खासतौर पर मुस्लिम बाहुल आबादी वाले देशों में अमेरिका के प्रति गुस्सा बढ़ा है। यह सर्वेक्षण जापान, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, थाईलैण्ड और वियतनाम में किया गया। इस सर्वेक्षण में पूछा गया कि उनकी नजर में अमेरिका की छवि कैसी है। इस सवाल के जवाब में अच्छी राय रखने वलों की संख्या के मुकाबले खराब राय रखने वालों की संख्या अधिक है।